

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ पदलिख्यते ॥ रागने
 सूतालचौतालौ ॥ उमहौगनपतदेहोबुधद
 ताधरैसीसगजुंम ॥ सिद्धश्रीनां वतिहा
 रोधरीथै जितही विद्याधरसपतहीपनवष
 म ॥ १ ॥ संसकृत उररिंध्रसिधा लीथै चंदन
 लेपाकीथै उजमंम ॥ तांनसेन प्रकृतमही
 कोंध्रावत काहासककहापिमं ॥ २ ॥ रागने
 सू ॥ मोसोंजो अवधबदगयेसांरुकीपियअ
 येनारनये ॥ ऐसीकोनचउरनारजिनउम
 विरमाये ऐसीसुषदये ॥ १ ॥ अधरनअंजन
 पीकलीकलागेनरनषचैननये ॥ धोंधीकेष
 उंउमबोहोनायककीनेनेहनये ॥ २ ॥ दैयोदि
 षोसषिहोअषियनसुषदेतहोऊजनां ॥ विद्यु
 रीअलकपीकपलकषंरुतअधरमंमतगंम
 सिथलगरसांवरेतनां ॥ १ ॥ नवलनऊज
 ऊसमउंजरचतसेजमैनेरुकलितहो
 कअंगअमजलकनां ॥ १ ॥ अरनचक
 तनेनचाहतविनकवलनेततालातताला ॥ प
 हतवांसहासीजनां ॥ १ ॥ ललितत्रिनंगीवि
 लो ॥ इनसोतनकैमाईरी ॥ १ ॥ कहिधोऊ
 कृदेषननपाऊ ॥ विसगरी ॥ सिषयेइनहकहांके ॥
 हैरीअरीरुतौकबकुकब ॥ विहारी ॥ पियप्रांनन
 कं ॥ १ ॥ प्रिरोधरधरधेरोकर

ककीईकनचलाक ॥ राजारामके आगेबा
 दन्वरीरागरंगकररिजाक ॥ २॥ १॥ ताल
 इकतालो ॥ बनबनवारीहोषेवतमोलत
 गायनकेसंगाधोरीधुमरकारीकाजरति
 नकौनांमलेलेरगरंग ॥ १॥ प्रियेपियाचदसौ
 जजियारो ॥ धरीधरीपकठिनकलनपरतहे
 नैकनकीज मारो ॥ २॥ ५॥ रागनेरुताल
 असवारी ॥ मासूडाजीमहांनै आवेठेहोनीदमा
 सूडाजीमहांनै आवेठे ॥ हेतोथांरीदासीस्यबाज
 नमजनमरी ॥ पोदडीनैआणजगावेठे ॥ ६॥ राग
 नेरुताल असवारी ॥ नीकीलागेठे महांनैआंन
 हेसांवाजीथांरीनीकीलागेठे महांनैआंन ॥
 कबकीमेगाडीगाडीअरजकरांवां ॥ तनधनक
 रांकरबांन ॥ ७॥ रागविनासतालडुतालो ॥
 गहिमनसवरसकौरससार ॥ लोकनेदकलव
 महीतजीये ॥ चजीयेनितबिहार ॥ १॥ यहका
 त्रिनपति ॥ ज्योसेवोस्पांमउदार ॥ कहे
 कुमनारामनांमउरधार ॥ २॥
 उतितालो ॥ बागोगरबई
 अंगनां ॥ तारनकीजोतबुटी
 ॥ मुखकीतंबोवफीकीनैनका
 रागविनासतालडुतालो ॥
 उठवैवे ॥ असपरसहेऊकर

तसिंगार॥ उनपहरीवाकीमोतनमाळा॥ उनप
 हेंस्येवाकोनवसरहार॥१॥ लटपटपेचसवारता
 स्यांमा॥ अलकसंवारतनंदकुमार॥ जेश्रानव
 जुगलवाकीजोरी॥ मेरैरीआंगनकरतविहार
 ॥२॥१०॥ रागविनासतालडतालौ॥ टीलीटीली
 मगनरौटीलीपागडरकरही॥ फहेसेपरतऐसी
 कोनपरफहेहो॥ गाढेजोहीयाकेपियऐसीगाढ
 कांनविया॥ गाढेगाढेनोजनसोंगाढेकरगहेहो
 ॥१॥ लालनलोयनउनीदिलागलागजातासांची
 कहेरसकप्यारेमैतोलालनहेहो॥ रसवरसात
 अलसातसगुचगतआएघातकहोवातरात
 कहांरहेहो॥२॥११॥ रागविनासतालडतालौ॥
 कंचुकीकसतरकतरकडुटतदिषतमदनमो
 हनघनस्यांम॥ मिसोकहाडुरावकरतहो॥ उमगत
 उरजडरतकेयांआंम॥१॥ बदनकवलपरअल
 कावलमांनो॥ वजनमधुपलेतविश्यांम॥ कृष्ण
 दासप्रभुगिरधरनागरथाहीनांतलजावत
 कांम॥२॥१२॥ रागललिततालतितालौ॥ प्य
 रीतेरेनैतारीअतिवांके॥ डेर॥ ललितत्रिनंगीवि
 हारीनागरातिअपनेकरआंके॥१॥ कहिधौक
 वरिकिशोरीकोकगुन॥ सिषयेइतहकहांके॥
 श्रीविवलविडुलवितोदविहारी॥ पियप्रांनन
 मैठांके॥२॥१३॥ रागललिततालतितालौ॥

बानीरिनेततिपरविनदूटला नांनो जइकली-
 रनवराहितअनृतरसद्युवत ॥१॥ कशरीकडे
 इतनेतवोतसे। इतलागतइतकवतह। श्रीवि
 लविडुकवितेडविहारी। पियकोसरवसद्युवत
 ॥२॥ १५॥ कतलदितनादितिलो ॥ प्यरीडत
 काजरकृतैकारी ॥ तांतेनवरउमतेइबराब
 र ॥ टिरो चंपेकीसीमारबैटेअखिकुंठडी। जाग
 जवडीअराअर ॥ १५॥ जवडीआंतघिरतकटकक
 मको ॥ तवजियहोतमरामर ॥ श्रीहरिघसकेस
 मीस्यामाऊजविहारी। होउमिअवरतजराकर
 ॥२॥ १५॥ रागकहितनाजदितिलो ॥ उतीधी
 अंधैरंगनरी। वरकारोबषकोट ॥ टिरो चंचल
 चपलसुरंगलबीलो ॥ आंतवतौमगजिता ॥ १५॥
 डुरतसुरतमपकतअतियारिचंचलकरत
 चोट ॥ चडरविहारीप्यरीकीडविनिरषता
 अतसुषकीषिट ॥ १५॥ १५॥ रागकहितनाजदित
 तिलो ॥ नदेंआएगिरवरधारीहोतागर ॥
 टिरो जियकीअपाजवडीमेंजोती। जोरकुला
 इहुंआगर ॥ १५॥

जिततकदितिलो ॥ कांईहुठनागाडोवालम
 राज ॥ टिरो पायववजैमूरीतलछकजागे ॥ म

फकरौमाहाराज ॥ ११ ॥ राग ललित तालति
तालौ ॥ प्यारीजी म्हांसूसूसर ह्याबौ किलकाज
॥ टेर ॥ अमलां रारातामाता म्हांरै म्हेलां आय
॥ सुफल नयो सबकाज ॥ ११ ॥ राग देवग
धार ताल अमौ चौतालौ ॥ तनकउमचित
वैमेरी और ॥ टेर ॥ हमचितवतउमचितवत
कंहां करमकीषोर ॥ ११ ॥ मैपियाजी कूंथौव
सिकरिं ॥ अंगुफियनवसिमोर ॥ अनंदध
नपियानिसदिनचितवत ॥ चितवतहोशग
थिनोरै ॥ २० ॥ राग देवगंधार ताल अमौ चौता
लौ ॥ दिवोइनलोगनहीकीबांनी ॥ टेर ॥ ब्रुतन
हीहरिचरननक ॥ मिथ्याजनप्रगुमांनी ॥ ११ ॥ ज
वजप्रदुतआयेघेरनक ॥ करतआपमनमां
नी ॥ कहेश्रीहरिदाससप्रदिमना निसदिनय
हगुनगावनी ॥ २१ ॥ राग देवगंधार ताल अ
मौ चौतालौ ॥ तिरौमघजोवततालविहारी ॥
॥ टेर ॥ तिरौसमाजअजहिनबूटत ॥ चाहतनां
हिहारी ॥ ११ ॥ औचकआयहोऊकरसेमुषा ॥
सेननदेतविहारी ॥ श्रीहरिदासकेस्वामीस
मा ॥ ऊंजविहारीकीलेतनोंबावरुवारी ॥ २१ ॥
२२ ॥ रागषटतालचलतलौ ॥ हृतौथांपरज
रीव्वारीव्वारीहोविहारीजी ॥ मृउमुसकन
परऊईबलिहारीजी ॥ टेर ॥ लाजना न

रीलैरांलागीबाला॥थिकांईउरधारीहोविहारीजी
 ॥१॥ औरतरेम तजांपोहो विहारीजी॥लाषांवा
 तांप्यारीहोसांधारीहो गिरधारीजी॥ वृजनिध
 अरजसफणोजीहमारी॥उममोहनहम
 प्यारीहोविहारीजी॥२॥२३॥रागषटतालचल
 ततितालो॥वांकीहीनोहनपधीयांवांकी॥वां
 केचितवननैनांवांके॥टेरा॥मैतहानेननिसै
 नदईनुना॥नटनसधीरुनां करीहांकी॥२॥ नर
 पिकंपिवचिजोरुनिकसी॥वाटगहीवरसांता
 थांकी॥हरिप्रसादप्रभुबैललघरकी॥
 काविधप्रातरहैगीटांकी॥२॥२४॥रागवि
 लाउलतालइकतालो॥दियेमाईकवरवमो
 दसरथको॥टेरा॥नरकसीपाघजरावतिलां॥
 जांमोवमोजरकसको॥२॥ नरमोतनकीमा
 लमतोहरा॥हाथफूलनरगसको॥जनउल
 डीकेएहीमनमांमो॥मुखमोस्योमनमथको
 ॥२॥२५॥रागविलाउलतालइकतालो॥का
 नतेरीसुरलीनैकवजाऊ॥हेजाजोहीजोहीतांन
 सूनूतेरैमुखकी॥सोहीसोहीगायसुनाऊ
 ॥२॥ यहैसुषसनकादिककौंडरलन॥विष्णु
 पारनपांजा॥सुरदासप्रभुतिहारीरुपाते॥नि
 रषनैनसुषपाऊ॥२॥२६॥रागविलाउलता
 लचलततिलालो॥हिमेंमाघांनवंसीवाला॥

मोरपषांदासुकटसोहंदा। गरगुंजुंहीमात्ना॥३॥
 विधुरीअलकसकलफगुधरारी। जरदडपदा
 वात्ना। सुरदासप्रभुतिहारीकृपातै। संतन
 दाखवात्ना॥२॥२७॥ रागविलाजलताल
 दौतालौ॥ जानामेआजातुमिनीप्यारेसां।
 तैअपनौमननांवतौरीआलीकीयौ॥टेरा॥
 रसकसजांतलाफलौलननतै॥अनतक
 जाननहीयौ॥१॥मोसोकहाडुरावकरतहो
 ॥डुरतनडुककतहीयौ॥कमनदासप्रभु
 गिरधरपियकौ॥अधरसुधारसपथ्यौ॥
 २॥२८॥ रागविलाजलतालअसवारी॥अव
 धरकैसैजाऊमेरीमईया॥पनघटकाठौहै
 रीकनईया॥टेरा॥काऊकौहारमोरफपटतहो॥
 संकनमानतरईया॥१॥कवऊकहसतखे
 लतउरकनसंग॥विचविचसुरलीसबदसु
 नईया॥दासजननहरषतप्रफुलतमन॥नि
 रषनैनसुषवईया॥२॥२९॥ रागविलावल
 नअसवारी॥आनंदवधावनीवधाव
 ॥१॥मिलेआजमेरेहोसुरजंनवां॥टेरा॥मो

तन चौक उरावो सषी मिला ॥ आनंद मंगल गा
वनो ॥ १ ॥ घुरत निशान नगारानां पता ॥ बंदन
मात्र बधावनो ॥ स्वरदास प्रभुतिहारी कृपाते ॥
निरषनेन सुषपांवनो ॥ २ ॥ ३ ॥ राग विलाज
जल ताल धी गति तालो ॥ आज हरि रैन उनी
दि आण ॥ ठि अंजन अधर लिलाट महावर ॥
नेन तंबो लर चाण ॥ १ ॥ हसन दाग नषरेषव
नी है ॥ बंदन कहां लगा पा ॥ सिध लदेह सिर
पाघ लट पटी ॥ चकटी चंदन ला पा ॥ २ ॥ वि
नगुन मात्र विराजत उर पर ॥ कंकन पीठ
गना पा ॥ स्वरदास प्रभु ये ही अचंनो ॥ त्रिय
तिलक कहां पा ॥ ३ ॥ राग विलाज जल ताल
जल हति तालो ॥ मरे पतर धुव रराज कंवा
र ॥ ठि जर कसी पाघ के सरी वैवागै ॥ गल मु
कता वल हार ॥ १ ॥ चकल जल न लन से
क ॥ ली ली नत अपार ॥ स्वरदास कर जोर
कहत है ॥ यहि नां मनिज सारा ॥ २ ॥ ३ ॥ रा
ग विलाज जल ताल चलत तिता लो ॥ हिली मं
रौ सां वरौ हिल दामिन ॥ ठि ॥ फष सागर अध

हरकरत है निस दिन रहत निचंत ॥१॥
३३॥ राग विलाजल चलत तिता लौ ॥ मु
जरौ लीजो हो निजर मरो येदी मुजरौ लीजो
गिरा मि तौ धां राचा कर जन मजन मरा ॥ क
डक पट मत की जौ ॥१॥ ३४॥ राग विलाजल
ताल चलत तिता लौ ॥ जल ज मना कौ कन
इया मोहि नर न दे हो जल ज मना कौ कन इया ॥
टेरा ॥ मेरे तौ संग की हर निकस गड़ी धर म घजे
वे मेरी म इया ॥१॥ ३५॥ राग विलाजल सर पर छ
ताल चलत तिता लौ ॥ मोपै पट मास्यो टोना
स्यां मस लोना ॥ टेरा ॥ नैनां विधले री मिरी आ
ली ॥ म्पु पषियन विच पां ना ॥१॥ ३६॥ राग वि
लाजल ताल इकता लौ ॥ प्रिया पीतांबर हु
र ली जीती ॥ टेरा ॥ हा हा करत न दे तला रु ली
चरन लुटत निस वी ती ॥१॥ राधा या ही उरा
यं स श्री ललि तादिक रहो सची ती ॥ श्री विठ
ल विठु ल विनोद विहारन ॥ प्रगट करत रस
री ती ॥२॥ ३७॥ राग विलाजल ताल जल
द तिता लौ ॥ धन धरी धन नाग हमारौ हर

जीकोहरसकरैमनमेरो॥ठिरा॥नक्तवबल
नक्तनसुषदायक॥रषियेचरनकवल
सांनेरो॥१॥सेवासमरणकबुनहिजां
ब्यातिरोहीविरहविचिरो॥दासजननकर
जोरकहतहै॥यहैबांनकमनमेरैवसरे
॥२॥रागविलाउजआमोचोतालो॥हर
कोअेसौहीसबषेल॥ठिरा॥मृघठदनाजगमा
परहीहै॥कक्षुबिजोराकक्षुकेल॥१॥धन
जोबनमद्युंराजतहे॥युंपंढीयनमैकेल॥
कहैश्रीहरिदाससमऊमन॥तीरथकोसे
मेल॥२॥३॥रागविलाउजआमोचोता
लो॥लिंगयेरेसांमपेरोमन॥२॥ठिरा॥वंसरीव
जाईमनबहरांनै॥सुफतनांहीननविन॥१॥
ध॥रागविलाउजतालचलततितालो॥
आंठौनिजरांरौहैकांईमहांसुराजराषण
नागाहांआंठौनिजरांरौ॥ठिरा॥सासबुरी
महांरीनलदहवीली॥पाफोसणकगडारो
जांठौ॥१॥धूंरीजीराजमहांनेदासीकहैबै
करौमतप्रीतमैवांठौरसकसनेहीनिह

ॐ जां नौ ॥ थारी सिफां मां है फूं रौ वां टौ ॥ २ ॥
॥ ११ ॥ सुनः ॥ मन हर वी नौ राज मन हर वी
हो इन गगिया नै ॥ १२ ॥ जं च मं च कडु मो ह
नी सी पा दें टिना सो कर दी नौ ॥ १३ ॥ नां व
न जां नू कां न गां व कौ ॥

॥ वर जोरी शान न वी नौ
॥ १४ ॥ राग विना उल्ल ता ल तिता लौ ॥ १५ ॥ धी त
पट वारौ अंग रंग कौ है सां वरौ ॥ नां व न जां नू
हं द्या कां न कौ है मा वरौ ॥ १६ ॥ तट ज म ना जू
कै धे न च रा वि ॥ वि न व जी वै ह स कौ ॥ आ वी री
न ब तै मे रौ मन वा वरौ ॥ १७ ॥ ११ ॥ राग विना
उल्ल ता ल तिता लौ च ल तौ ॥ कै सै कर बं ग री
मारी मुर कां नी मारी माया ॥ र हो जू लं ग र वा ॥
धी व मे हर वा ॥ गु न र स हा ध विकां नी मारी
माया ॥ १८ ॥

॥ १९ ॥ ध ध ॥ स ग विना उल्ल ता ल
च ल त तिता लौ ॥ नै न नि नि र यौ श्री गिर वर
धारी ॥ र स ना र टां नां म नि स वा स र को ट

।जनमडषदाखदहारी॥ १॥ सिवापरमस्फुल
रविराजतयहसोनास्फुटरइधकारी॥ ३॥
जाधीसप्रनुसोनासागरा॥ मिनेत्रेमतन
मनधनवारी॥ २॥ ४॥ रागतोमीताबधि
प्रोतितालो॥ दिनदिनआनंदकरतरह
ता॥ ललनांलावनकेअंगसंग॥ दिशतो
हीस्व॥ हिन्मिन्नातोहीस्वमनकेतरंग
॥ ३॥ ४॥ रागतोमीताबधैतालो॥ अरी
छोऊदेषवनेअरसांनै॥ ५॥ कुसमतसेज
नोरउठवेवे॥ स्फुतरसमसांनै॥ ६॥ द
रपनलेकबक्तबविनिरषत॥ सीतवस
तस्फुषसांनै॥ नंददासप्रचुरीजेयरस
परा॥ अंगअंगपयसांनै॥ ७॥ ८॥ राग
असावरीताबडुतालो॥ मेरीअधियनके
न्यूनगिरधारी॥ ९॥ बलिबलिजाऊब
बीलीबविपर॥ अतेआनंदस्फुषकारी
॥ १०॥ परमउदारचतुरचितामण॥ दरसपरस
स्फुषकारी॥ अतुअप्रतापतनकतुनबीदन
॥ मांनतसेवानारी॥ ११॥ सीतस्वामीगिरधर

नविदसजस॥गावतगोकलनारी॥कहा
वरनांगुतगाथनाथके॥श्रीविठ्ठलहिर
दयविहारी॥३॥ध॥रागआसावरीता
लडुलालो॥हांबलिबलिजाऊतिहारेदो
ललनांआजमेरेकैसेहोपावधारि॥दे
कांनमिसआवनोवनोपीवमेरोजागेहै
जागहप्रारे॥१॥अबहीकहानवठावर
करहो॥सुंदरनंददुलारे॥नंददासप्रनु
तनमनधनसब॥तेपैहलैहीउवारि॥
॥ध॥रागगूजरीताल्लचौतालौ॥उठ
तनोरलाजजूकेसंग॥कंचुकीकसत
राधिकाप्यारी॥टेर॥किसकिसपरत
नीलपटसिरहीतै॥सिसवदनीनव
जोबनवारी॥१॥अननावतेलाउन
गिरधरजूकी॥रचीहैविधांतसोहस्त
संवारी॥जैश्रीनट्टकरतरंगनीतै॥
प्रियासहितदेषेऊजविहारी॥

रागभुजरीताळडताळी॥ महीकोघम
कोहोय॥ तुत्सुगिरधरनाचे॥ महीकोघम
कोहोय॥ टि॥ कटकिकनीकंनप्रचुप
नंपरा॥ सहजमितेस्फुरहोया॥ शिष्यत
नेकंहतनहीआवे॥ उपमाकोहुजो
हीकोय॥ सुरनवरकोतिवरनिसायै
रहेस्फुरनरमुनिजोय॥ २॥ ५१॥ रागभुजरी
वीताळडकताळी॥ विम्हांरीजोडीरारा
जिहपनाथितोहरवसौराजकूजीहोमां
रीजोडीराराजिहपना॥ टि॥ कवकीहुवाठ
वाडीअरजकरांबां॥ उवास्वथांपरहीरामो
तीधना॥ १॥ ५२॥ रागभुजरीवीताळडकताळी
विम्हांरासांवलासाजनराज॥ म्हांवदर
सहीदिसाजामांरासांवलासाजनराज
॥ टि॥ उनीकनीमुधानेणीअरजकरै
ठे॥ सुसरंहाठोकिणकाज॥ १॥ ५३॥
रागभुजरीवीताळडकताळी॥ काईज

गुनोन्ह्यांरौ कीवौठै। प्रांनैमिनायद्यैसाहि
 बाहंराजा॥टेर॥क्रिठौबीदेसांज्वारीबूदीब
 देस्यां॥ध्यांस्वन्ग्योमहांरौकाजा॥१॥५४॥
 रागनैरवीतालतितालौ॥साथीडाम्हारै
 साथनिनांण॥हमपरदेसीमुलकविरांण
 ॥टेर॥इसडुनीयांविचवेआवणाबीजांवणा
 मेराप्यारा॥अपणासोअपणाविरांणसे
 विरांण॥१॥५५॥रागनैरवीतालतिता
 लौ॥आदमआदमआदमदमदा॥इहदम
 जुगविचक्युकरमदा॥टेर॥बाभमगस्तर
 होअपनीजमगनालमेरासांण॥इस
 डुनीयांविचयेहीनलाकमदा॥१॥५६॥
 रागनैरवीतालतितालौ॥सांवलकौद
 रसदिषावौमेरीसजनी॥सांवरोहैकाम
 णगारौमेरीसजनी॥सांवराकौदसदि
 षावौ॥टेर॥इनदिष्यांविनकलनकरतडे
 ॥इनहीकौगुनगावौ॥१॥५७॥

वीता लक्ष्मीमोतिता लौ ॥ जर छडपरा वा
नानी सां वला ॥ तिमिर मुकट पीतंबर
सो हो ॥ गज मोत न गल मावा ॥ १५ ॥ पछारा
ग नैर वीता लक्ष्मीमोतिता लौ ॥ मि तौ ऊ
ईयां क्वा त क सीर मै के सा ज नां ॥ मि तौ ऊ ई
यां की त क सीर ॥ सां ही पी र न प्यारो ही ज
ग हा ॥ तिरा क ब की मै वा डी ग डी अर ज
करां बां ॥ प्यारो मै ने दिल् की जां ए हा ॥
शां प ॥ रा ॥ ग नैर वीता लक्ष्मीमोतिता
लौ ॥ उ म मै जो र जो री वि ॥ दिल् हा मै हर
म मा स्तु डा मि जा जी डा ॥ दि ॥ उ क दे व्वां
वि न क ल न पर त है ॥ पिय च उ र ह म ने
री वि ॥ १॥ ६० ॥ रा ग नैर वीता लक्ष्मीमोतिता लौ
॥ म न मि रौ मो ह्यो रे इ न वं सी वारे मै म न मि
रौ मो ह्यो रे ॥ तिमिर मुकट पीतंबर सो हि
श्रवन ऊ ऊ ल व वि सो ह्यो रे ॥ १॥ ६१ ॥ रा
ग नैर वीता लक्ष्मीमोतिता लौ ॥ आज हारै आ

जिहोसां वला जीथे तो आज म्हां रै आजा ॥ दि
रा ॥ उच्छडीर तन जडा वकी लाजा ॥ रंगर
संवात वणजा ॥ १२ ॥ ६ ॥ रा म्हे रकी ता
वज्जल दत्तिला लो ॥ म्हां नै प्यो रो लगे बै
सां वरो बं बालो हो म्हां नै प्यो रो लगे बै ॥
दिशा म्भसागर अघ हरत कृपा करा द
रस की यां डष लगे बै ॥ १ ॥ कं वसरी ड
कर हीरत की ॥ किसरी ये रंग वीगे बै ॥
रदास प्रल्ह इतके सरणे ॥ ता म्हा मारे जा
गे बै ॥ १३ ॥ ३ ॥ रा म्सा रंग ता लो चो ला
जे ॥ नैन नती दग ईरी आली ॥ निस दिन
मिरी छतियां लपोर हे धर को ॥ दिशा ज बने
मोहन मुरली बजाई माई ॥ सुध नर हीर
क बू ॥ और दिहत मोहि धर को ॥ १ ॥ नं न
दी उसा सजेत ॥ निस दिन गारहिता स
सत कत मेरी पायन को धर को ॥ कैसे
कजई ये कैसे दरसन पई ये ॥ कृक म्

नगिरधरको मेरो हाथ नयो पातर तरको
 मशां द्य ॥ राग सारंग ता ल चोता लो ॥
 वैवेहराधा संग ॥ कंजनवन अपने रंग ॥
 कर सुखी अंधर धरो ॥ सारंग सुरगा री ॥
 रा ॥ वि ॥ मोहन अत ही सुजांन ॥ परम
 चतुर गुन मिधांन ॥ जांन ब्रह्म एक तांन
 चक कैवजाई ॥ १ ॥ प्यारी जब गहो व
 न ॥ सकल कला गुन प्रवीन ॥ अत न
 वीन रूप सहित वेही तांन सुनाई ॥
 वल नगिरधर नला ल ॥ री ऊ द ई अं
 क मा धन ॥ कि हत न ले न ले न ले सुं
 र सुष दाई ॥ रा ॥ द्य ॥ रा ॥ रा ॥ रा ॥ रा ॥ रा ॥
 अगे चोता लो ॥ मेरे बल दी ऊ गोरको ॥ वि ॥
 इक बल है मोहि हरन कनको ॥ इजो बं
 कि सोरको ॥ १ ॥ मन वचन मकर उ प्र ही
 मेरे ॥ नां हि न रो सौ ओरको ॥ श्री विठ्ठ
 गिरधर न कृपानिध ॥ वधन कुल सिरपे

रकौ ॥२॥६६॥ राग सारंग ताल इकता लौ ॥ अ
री इ न लो ग न कौ का हा की नो ॥ मै अप नो म
न ना व न दी नो ॥ टेर ॥ म न दै मो ल लं यो रे स
ज नी ॥ उ म म न ना व न नं द डु लारे न व ल ल
ल रंग नी नो ॥१॥६७॥ राग सारंग ताल च ल
ल तिता लौ ॥ प र न ला गी ग्री ष वि र ष वा सो
ब ल मा मो रे य ह सं त ग व न न की जि ये ॥ टेर
ह रे ह रे स त वा के थं न व ना ए ॥ ति न ति ल व
ट स्र ष ली जि ये ॥१॥६८॥ राग सारंग त
ल च ल त तिता लौ ॥ हे री मा ई कां न दे स कां
न न ग र वां जा य व से र वा ज हां मे रा पी व
र वा हे री मा ई कां न दे स ॥ टेर ॥ वि ष वि ष प
ती या पि या ज्जु क मे दू ॥ बा य र हे वा लु दे स
॥१॥६९॥ राग सारंग ताल तिता लौ ॥ आ
नं द आ ज व धा व नो मे रै ध र ॥ आ पु मे रे
पी या ही सु र ज न वा ॥ टेर ॥ स ग री स्र ष सि त
मं ग ल गा वौ ॥ मो सी य नं चो क डुरा इ लौ ॥

रागसांवतसारंगतालइकताले॥ होवि
रईयांकीठांही॥ पियाजुगवनकीयोवि
दिसअंबरईयांकीठांही॥ टिर॥ प्रकृती
विराजाहंराबागमैहोराज॥ किणविध
दिसणमेजांई॥ १॥ ७॥ रागसांवत
ततालइकताले॥ वारीछन्नवरारोहोव
रीछन्नवरारोकंधाम्हांरैआमोबारणे
होवारीछन्नवरारो॥ टिर॥ सगरीसषीमि
लगइवाकृदिसवा॥ काचीकलीयनजन
बिडेरे॥ १॥ ७॥ रागसांवतसारंगताल
जलदतिताले॥ होगुमांठीहंराबीरमा
रिबीरमा॥ टिर॥ नोहैतौसादीतेरीबण
होकाबाणबे॥ अषीयांतेमाठीतेरीत
रण॥ १॥ ७॥ रागसांवतसारंगताल
इकताले॥ षसरोबंगलौबवायदोहोमां
वलाजीहंनैषसरोबंगलौबवायदो॥
टिर॥ ओखसीरकीवनीरावटी॥ जाली

ऊरोषाळगाथदो ॥१॥ ७५ ॥ राग सारंग ल्ह
हरताळइकतालो ॥ मांहीस्वुहोनेहडको
निनाजोहोपनामास्वुजीराज मांहीस्वुजीने
हडकोनिनाजो ॥ ७६ ॥ ऊनीऊनीवृथा
नेणीअरजकरैठे ॥ इकवारमेहलांथेअ
जो ॥ १ ॥ ७५ ॥ राग ल्हहर सारंग ताळइकता
लो ॥ वैगनेपधारो म्हारै पांवणाहोष्याळ
डाळाळ ॥ ७६ ॥ आठो जगमिंदरांथांरो
वैसणो ॥ आठी आठी उनालाथारीमौजे
॥ १ ॥ ७६ ॥ राग ल्हहर सारंग ताळ जलड
तितालो ॥ हो म्हारै पनाजीरौ डपटो दीजे
दरजण म्हारी अंगीयारै हवादि ॥ ७७ ॥ हि म्ह
राकांनानैजाळ घडावजो ॥ म्हारी विसर
रतनजडावोहो ॥ १ ॥ ७५ ॥ राग ल्हहर सार
गताळइकतालो ॥ पनाजीनेकैजोहो न
लआजो म्हारै पांऊणा दिसोतीनेकैजे
हो नलआजो म्हारै पांऊणो ॥ ७८ ॥

घाटी तौ नगारारे म्हां राहे जा सा रूहे स
एगहिजा कांई ठापर नूनकावेसे न ॥
७८ ॥ राग लहर जंगला तो उइकता लो ॥
कांताजी कांमणगारा ये तौ म्हां नेवाला
लागौराज ॥ टिश ॥ घरी डपैरी ऊंजां म्हां ही ॥
यां सु म्हां रौ काज ॥ ११ ॥ रंगरंगी लो ठे लठ
बी लो ॥ लो गा लो सिर ताज ॥ वृजनिध म्हां
रे मनमैव सीया ॥ आघाप धारौ राज ॥ १२ ॥
७९ ॥ राग लहर जंगला तो उइकता लो ॥
गुमां नीडा परदेसनजा ॥ म्हुमरवरसेला
पांणी ॥ टिश ॥ चपचप पां नी पगपग पां नी
॥ अरजकरे ठे थां री म्हा नेनी ॥ १३ ॥ ८० ॥
राग लठ ला लठ लो ॥ श्रीतम श्रीत हति
पइये ॥ टिश ॥ जदपि रूपगुन सी ल सुघ
रता ॥ इनवात नरि ऊइये ॥ १४ ॥ सतकल
जमववीन सु लठ लो ॥ अमत डरां न पद
इये ॥ गोविध्रं नु विने सने ह सवा रू ॥

रसनाकहातचईयै ॥२॥८१॥ राग नट
 लडुतालौ ॥ तासों मांनकी जिथैजो ॥ अ
 पकरतहे निहारे ॥ टेर ॥ रसकेरसीनेला
 न ॥ रससोंकरतष्याल ॥ उचारोंलाषकि
 गेरे ॥१॥८२॥ राग नट तालडुतालौ ॥ म
 धोमाधोनां वली जिथैजो ॥ बोहतकर
 तहेनोहरे ॥ टेर ॥ आंनगहेगेकेसहुतज
 व ॥ फिरपिठतावोगेबोहरे ॥१॥८३॥
 राग नट तालडुतालौ ॥ कांनतेरीपुर
 लीनेकवजाऊ ॥ टेर ॥ जोहीजोहीतांन
 स्रनततेरेसुषकी ॥ सोहीसोहीगाय
 स्रनाऊ ॥१॥

॥२॥८४॥ राग नट ताल

डुतालौ ॥ आजवनवनलावनआएर
 तिरे ॥ मांनकरनांबावर ॥ टेर ॥ जहपि

बौहनायकककनमनअटक्योरीतिरा
गुनरूपमोही तातेतोसेहैरीनवर॥
ॐसैरीलाहनपरतनमनधन
जि॥समजसयांनी घरीघरीघटतवि
नांवर॥इतीकेवचनस्वनप्रममग
ननईमिलीरीगोबिद्वन्तसुराषीबंध
महागदांवर॥२॥८५॥रागसिंधवी
तावचलततित्तालो॥राजथांनैजां
एाहोराजथांनैजांएा॥टेरा॥डीकापिच
लजीकानैणां॥राजथांराअडवड
बोळपिठांएाहोराजजांएा॥२॥मह
उकीयामाहाराजराजवी॥राजथांरी
सिजडीयांरंगमांएाहोराजजांएा॥२॥
८६॥रागसिंधवीतावचलततित्ता
लो॥महंनैप्यारावागोहोराजवागे
।राजथांरापाघांरापेचसवारेहो॥६॥
महबकनस्याउनीदानैणां॥राजथां

रौकेसरीयांधूमात्नौफुलांनारौहोराज
 नारौ॥१॥८६॥ रागसिंधवीतालधीमौ
 तितात्नौ॥ मांहरैमैलांआजोहोराज
 आजोहोराजधारीप्यारीजीकहैवैर
 गनाजो॥टेरागजमोतनकीवेसरत्ता
 जोराजमहांनैत्नौडीलागीकैहवतनाजे
 हो॥१॥८७॥ रागसिंधवीतालधीमोति
 तात्नौ॥ म्हांरौमनमोह्योहोराजमोह्यो
 ॥ राजधारांरौकेसरीयोत्तपेटौमनमो
 ह्यो साष्टीडांरीजोडवणीअत
 नारी॥ राजधारांरैगजमोतीगतसाह्यो
 होराजसाह्यो॥१॥८८॥ रागसिंधवी
 तालधीमौतितानौ॥ राजमहांरीमां
 नौहोराजमंनौ॥ किलओगुणधासोहो
 पनामहांसुरीसलो॥टेरा॥

तन॥ मधर ताइ मुखवै न॥ तजल चीर परमल
धरौ॥ लाज वंत कै नै न॥ १२॥ बपै॥ चंचल चपल
अति स्यां प्रने न मृग कुटिल च कुटिवरा॥ तिल
कमेद सुकनास त्रिवली जहां होइ कंठ तरा॥ वच
न गमन जिह हीन अंग को मल विचित्र अति॥ त
न सुकल म कटि धीन अंग टहां मनी देह उति॥ अ
नेद चंद वर न न वदन सदा अंग निरमल रहो॥
आहार पांन अषित अमल विमल वौर वैवो चहो॥
॥ १३॥ सवैया॥ बाल सी वैसर है सब ही दिन॥ प्रांन करौ
अति ही कबुलाजै॥ स्वित सरोज हि हेत धरै अति
उजल चीर सरीर हि बजै॥ वारज को सव न्यो यह
कांमनि वीरज नीरज वासु विराजै॥ दिह जही म
अनंदति रंजा के रूप पदम निराजै॥ १४॥ अथ
चित्र नील बनं॥ दिहा॥ चित्र रूप सम चित्रनी॥ अ
ति विचित्र सरीति॥ चित लावत सब कांम तजि॥
निरष चित्र संगीता॥ १५॥ नहि नारी डर बल न ही
लक्ष्मी रघन हि अंग॥ अति विचित्र ताइ चित्रनी॥
लोचन चक्र करंग॥ १६॥ बपै॥ अमल कमल द
लवसन नैत चंचल अनीयारो॥ मधर मुख वच
न वासु कंचित कुच कारो॥ लक्ष्मी रघन हि अंग
सरबत नगर बजनावत॥ दया वंत अति होत उ
प परमल बजनावत॥ ग्रीवा कपोत गुं घट उरि
य गति गर्य द आर्ष द जिहि॥ सील वंत सुविचि
त्र अति कदलिषं न ऊग जं ध जिहि॥ १७॥ सवे

या॥ कामको धाम वनो अति सुंदर वारको नाम न
ही संग जाके॥ वरु ल होय न होय सो दीरघ वास म
नो मधकंद पताके॥ चाह न ही चिर को रति चित्रण
दृष्ट ए सब लक्षण वाको राम रूप विन कामकी
लको असीयो नाम नि धाम है काके॥ १८॥ अथ
षनी लब्धना॥ तन दीरघ दीरघ लुजा कर पद दीरघ
नाम॥ चल त चल उ चाल अति जांन संघनी नाम
॥ १५॥ संघ निरुस कर कस वचना॥ दीरघ डर बल दि
ह॥ निहचै अ विलंब त चलता॥ जांन संघनी एह
२॥ अषिया॥ लघ लोचन असु कटिल ग्रीव पिठ
दीरघ नारी॥ सदा पीन तन रहे जगर कटी जाको ना
री॥ ऊच रूप मन कुटिल अधिकता मस तिहि
कामनि॥ असु कटिल सम परिवंस घीत चाहते
ति नामनि॥ डुर घहिल पटति रति समै असु क
लावत टटकीये॥ स्फुरत करत हारत नही सेन
यो चाहत हीये॥ २॥ सवेया॥ घीत कीरी तन जांन
० नै करु कामकी लोलको आउर नारी॥ पिमद
की वान अजांन सुधा उर कंद प्री जो निकु वास कु
न धारी॥ का रुसों नै कमया न करै सब लब्ध न ही न इहे
असीय नारी॥ २॥ अथ हस्तिनी लब्धनी॥ तन नारी
आसी नारी लुजा॥ नारी उर अतंदा॥ नारी ग्रीव
नि तंब जै घा॥ चल त हस्त नी मंदा रटि चिपई मरु
नमत सदा जार हो॥ आतंदा वचन न का रुक हो॥ अ

पनी अस्तु तत्रापुकारौ। लाजवृत्तको मूल उषारौ।
 अंकुसधर्मकां नगहिमारौ। घापत्वारसवअंग विधा
 रौ। कटअरुजंघकलाईमोटी। करतलकुट्टअंगुली
 याळोटी। निरुवचनअपस्वारथकरौ। गुरजनस
 कनमनमै धरो। २४। उहा। अपजसकीसलताधसे
 वहउलंघनहिजाय। पंगबंधनअपकृतकौ। हस्त
 नहस्तस्फनाया। २५। सवैया। कांमकिलोलसमैअ
 तिआउरपायउनैपतियावलिमारौ। जोनिकवी
 रबुटेदोऊफवाहरहीउरवारनपारौ। कंदपगंध
 पगंदवहैइहिनेदविचारौ। किलसमैपतिहारत
 वेगहीनेकनहस्तिनकोमनहारौ। २६। सौरग। चित्र
 लीहरलीजांनासंघनरेपउरंगनी। हस्तिनहस्तसा
 मांत। पद्मनिकीउपमानही। २७। षटकरपलवचित्र
 ली। नवसंघनीसरीरा। वादशाहस्तिनिजांनीयो। इहवि
 धजोनिगंजीरा। २८। इतिश्रीषड्विंशमसमाप्तं। अथ
 पुरुषजातवर्णनां। उहा। समाऊरंगमदृषनहया।
 प्रगटपुरुषएआसानयसिधलगलडनसकला।
 कहेविचारविचार। २९। अथसखिलबनं। सुकृतम
 कोमलमधवचन। सीलवंतसुग्योना। रतिविनो
 वअतिसुचनही। पुरुषऊससासुजांना। ३०। अथ
 ऊरंगलबनं। मधरवचनमृगमधतना। चपल
 बुध्दितनीरा। चउरसाधअतिहस्तसुष। कामी
 कनकसरीरा। ३१। अथदृषनलबनं। दृषनना
 मनारीपुरुष। हाताकरस्फनाव। कपटीलबनंपट

हरी॥ कामके नवऊचाव॥ ३२॥ अथ उरंगलहनं॥
 तनदीरघदीरघचरण॥ नयसिषदीरघअंगा॥ सु
 नरुतरुणसंगहृत्त॥ रसीयाअधिकउ
 रुषा॥ चतुरषठनवजोना॥ द्वादसकरपध्ववप्रग
 ॥ मदनांकुसपरवांन॥ ससाआदजांनऊ ॥
 ३४॥ ३५॥ ससापुरषपद्वनित्रिया॥ समरतिया
 नांमा॥ उजैपरस्पररतिवहो॥ औरनसोनहीकां
 ॥ ३५॥ इति तृतीयषडं॥ अथ समरतिवर्णनं॥ ३६॥
 ह्यकरनीहरनीहरना॥ वृषनसंघनीसंग॥ इन
 मनिस्फुषऊपजै॥ वटैप्रेमउज्जंअंग॥ ३६॥ अ
 उच्चरतिवर्णनं॥ सोरवा॥ वृषनऊंरंगनिसंग॥
 वरउरंगउरंगनी॥ मतवचइनकेसंग॥ प्रगट
 उच्चरतिजांतीयै॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥
 रषवृषनकरनीत्रीया॥ इनकेजनमअक्या
 ॥ प्रगटनीचरतिजांतीयै॥ ३८॥ अथ उच्चरति
 वर्णनं॥ ३९॥ ह्यहरनीअतिउच्चरति॥ मृ
 करनीअतिनीचा॥ नरनारीतैजौअधिक॥ तौ
 स्फुषसेजाबीच॥ ४०॥ सोरवाजैसीजोनिगंनी
 मदनांकुसजैसौचहो॥ तौस्फुषहोयसरीरा
 कसारइमज्जरी॥ ४१॥ इति चतुर्थषडं॥ ४२॥
 जिहत्रियकौरतिसुचिनही॥ पियविलसैजो
 हि॥ नीमनिमुदतनहायकवा॥ वृथासक
 यआहि॥ ४३॥ अनसुचित्रियपुरषहिमिलो
 हिकोकइमनाइ॥ जैसैरोगीनीवकौ॥ अंष

पीजाय॥ अजिजनजांनैकोकपडि। करैसजत
 विचार॥ अतसुषउपजेरबनिकों॥ रतिसचि
 मांनैनार॥ ४३॥ अथकांमनिवासहेहा॥
 मकैवांमदिसि॥ वसतसद्यंगर॥
 जगायकै॥ पियविलसेतियसंग॥ ४४॥ अथपु
 वाअसतश्रीमंतकांम॥ तिहकरजदतरति
 नांम॥ द्वितीयाद्गचुंबनकरतकल॥ ४५॥
 सुदितत्रियअधरदंत॥ जबचौथकांमआवैकपो
 ॥ तबचुंबनषंनकरिकिलोल॥ श्रीवांपाबै
 काषमेत॥ उहुगौरकहो नषदंतदेना॥ सासो
 रमदंतकरैउरोज॥ तबवसतआयनैहचैममो
 ज॥ आवैजुकांमकोकोइहविचार॥ करपरदन
 कीजतताहतरि॥ नवमीसुनानिकटदसैहोय
 करिपरदनकीजतअंगहोय॥ एकादसमनसिज
 अगनिवाक॥ तहंमदनधांमकोकरैवास॥ तादि
 नजोकीजैबहुप्रसंग॥ तबप्रवैतरुनितबह
 अंतंग॥ द्वादसिमनौंजतिहजंघसंग॥ रतिर
 वनत्रयोदसगुल्फसंग॥ चोदसकोचरणकरै
 निवास॥ अमावसपगअंगुष्टवास॥ करपर
 नकीजतताहतरि॥ इहाविधजुरुअउप
 जहिविचार॥ ४५॥ ४६॥ अमावसपरिवाविम
 लापदअंगुष्टअंतंग॥ जिहमगउतस्योरतिर
 वन॥ चढतचलोतिहअंग॥ ४६॥ अथपदको
 आदिदी॥ सुकलपदविधजांनानंअहितैति

तिथिनिरषकै॥ अंगकीयापहिचाना॥ ४७॥ मंग
 लाबंद ॥ ॥ पदमनीपरिवाहजपाचैचौपचाहे
 जोग॥ चित्रणी आवैबविदसमीवाहसीसंयोग
 ॥ संघनीसातैतंजतिरसशुभारसदहतमनोज
 ॥ हस्तनीक्ष्मींनवमिचौदसवचनंविक्ततचोज

१	१५	मंगमध्येनषदानकरण
२	१५	मावीआंषचुवनकरण
३	१३	अधरमध्येषदानकरण
४	१२	गालचुवनकरण
५	११	कंठमध्येनषदानकरण
६	१०	काष्मध्येमरदनकरण
७	९	ऊर्ध्वमध्येनषदानकरण
८	८	उरस्थलमध्येनषदानकरण
९	८	नाभिमध्येनषदानकरण
१०	६	कटिमध्येमरदनकरण
११	५	नागमध्येप्रहारकरण
१२	४	जंघमध्येमरदनकरण
१३	३	गुल्फमध्येमरदनकरण
१४	२	चरणमध्येमरदनकरण
१५	२	पगअंगुष्टमध्येमरदनकरण

॥ ५३ ॥ निसविचमरतिपदमनी॥ ज्ञानचित्रणी
 ज्ञान॥ वीतीनिसविधमंपनी इस्त

रंम ॥ धर ॥ इति पञ्चमः ॥ अथ स्त्रीवैसृण
नां ॥ कंसागौरीसमरुके ॥ बालातरुणीजांन ॥ वि
टावृधानांमनी ॥ एषटवैसवषांन ॥ ५ ॥ अथि
॥ सातवरषपरजंतसुकंसाजांनीये ॥ तासौका
मकिलोलनकवक्तगंनीये ॥ बालापणकौषेल
सदामननावई ॥ फुनिहां ॥ कबुइकलोकविला
सनमनमैआवई ॥ ५ ॥ आठवरषतैगौरीतेरह
केतले ॥ चाहेचउरषिलोनासुंदरअतिनले
॥ जोजनविलसेतासअधिकसुषपावई ॥ फु
निहांताकौअधिकविलासनकवक्तनावई ॥
५ ॥ बालातेरहआदिज्जवीसहकेतले ॥ चाहेप
नप्रसुतसुसोरंनअतिनले ॥ तासौकामकि
लोलहेतजोलावई ॥ प्रीतवडेडुरुओरमहासु
षपावई ॥ ५ ॥ तीसवरषपरजंतसुतरुणक
हावई ॥ नूषनचीरअनुपताहिअतिनावई
॥ तासौकामकिलोलहेतजोलावही ॥ एरणप्र
मअनंदपरसपरपावही ॥ ५ ॥ बालिसवरषप्र
माणसप्रोठानामनी ॥ चाहेओरकबूप्रमंतजि
कामनी ॥ जोजनकामकिलोलताहिसंगलावई
॥ फुनिहां ॥ नावअनेकसौतामिनिताहिरिजा
ई ॥ ५ ॥ फुनिवृधात्रियहोयश्रवणसुणलीज
ये ॥ तासौकामकिलोलनकवक्तकीजीये ॥ आं
मनिथोरीप्रीतबोहतकरमांतीये ॥ फुनिहां ॥
आपनवेसविचारआपजियजांनीये ॥ ५ ॥ ५

॥ जो मन नावै नामिकै ॥ पवै देहि सौ ताहि ॥ प्रव
 वतहितचितरुचिवदौ ॥ करै श्रीतनिरवाहा
 ॥ ५७ ॥ इतिषष्टमखंड ॥ अथनारीपरिधा
 ॥ द्विगुनरुधाकामनिजवरामन
 हवषटगुनहोय ॥ मदनअष्टगुनलाजदस ॥ ति
 ययहविधसवकोय ॥ ५८ ॥ अथविनचारण
 लबन ॥ फुरवेसरठं विनचारणसंगरहैजौका
 मनि ॥ रहैसदा मायकेनामनि ॥ बज्रउरपत
 मैनारीरहै ॥ नासैशीलकोकइमकहै ॥ ५९ ॥
 विरक्तवतीलबन ॥ दोधुकबंद ॥ उतर
 वेगनदैकवक्षपतिकैमुषकोरनवांमनिहारे
 ॥ पौढैपीठदयेपतिकैसंगुचुंबनकोमुषपौठ
 कैमारै ॥ जौपतिकैकोऊआवतप्रीतमउरज
 नसौअपनैजियधारै ॥ लबनएजिनषेमनजे
 प्रीयदठिनहोयसेनिदविचारै ॥ ६० ॥ अथअ
 नुरागवतीलबन ॥ ठपै ॥ दृगनरिनिरयतति
 लजहसतकुलुअंगदियावत ॥ बिनमुषदेत
 उधारबिनकमुषदेयदुरावत ॥ चलतथंकत
 ऊपरहतचरणआनरणसुधारत ॥ करका
 दाक्षमुषमुदितप्रगटनटजटीसंवारत ॥
 पलवचरणउहवीषनतपियनिहारिकस
 तऊच ॥ अनुरागवतीइहिविधिरहिप्रीतर
 तजिहिअधिकरुच ॥ ६१ ॥ अथनामावती
 लबन ॥ चितवतकरगहि

रदन-नारिसि॥ अधर-आप-रुचि-गहित-
गबज-देष-त-आरसि॥ सषिकों-अंक-हिन-र
सुकर-पद्म-वच-मका-वत॥ दोर-पौर-पे-आय
वि-चित-फिर-च-क्त-ला-वत॥ अति-जन्ना-त-वि
न-समै-चित-कं-बज-सु-ऊ-च-ल-ऊ-कर-त॥ अ
च-ल-उरो-ज-टं-प-त-न-ही-म-दन-म-त्र-श-हि-वि-धिर
त॥ ६३॥ अथ-का-मा-व-ती-ल-ल-त॥ ॥ ज-व
व-न-म-द-म-त्र-कं-त-वि-बु-स्यौ-चिर-काल-हि॥ का-म
नि-न-ए-प्र-सू-त-दे-त-ज-ल-नि-ज-ना-ल-हि॥ उ-ष्-फ
ती-ज-व-त-रु-णि-मा-स-दो-य-वी-च-त-जा-त-न॥ नौ
न-ग-न-नि-वा-स-का-म-ब-हु-आ-प-त-ता-त-न॥ ६४
॥ ६५ ॥ न-व-ती-ल-ल-त॥ दो-हरा ॥ नै-न-न-मा-वे-सि-थ-ल
त-न॥ क-हे-सु-कं-प-त-बै-न॥ क-लि-क-ला-इ-बू-दो-च
हे॥ ज-ब-हि-इ-व-हि-तिय-में-न॥ ६६॥ अथ-नौ-री-वि
॥ ॥ नि-ल-ज-ऊ-र-बो-ल-त-अ-धिक॥ अ-ति-ता
म-स-अ-ति-हा-स॥ क-हे-को-क-व-ह-त-रु-णि-को-स
क-ल-क-ल-ल-न-ता-स॥ ६७॥ जा-की-जु-ग-ना-है-जु
री॥ अ-सी-जौ-त्रिय-हो-य॥ क-ह-त-को-क-व-ह-ऊ-टि
ल-म-त॥ ना-हि-न-प-ती-या-को-या॥ ६८॥ त-न-कं-प-त
मा-र-ग-च-ल-त॥ च-ष-पि-गं-ल-उ-र-वा-ल॥ ज-हां-त-हां
उ-म-दे-षी-यो॥ वि-न-चा-र-न-व-ह-वा-ल॥ ६९॥ गिर-त-र
व-र-प्र-रि-ता-वि-हंग॥ जि-हि-न-ष-त्र-को-नां-म॥ प्र-ग-ट
जु-ग-त-मै-दे-षी-यो॥ वि-न-चा-र-न-व-ह-वां-म॥ ७०
जि-ह-कै-प-ग-अंगु-ष्टि-घ-टा॥ उ-प-गा-जौ-व-टि-हो-य

आहतहीपतिकेहरे॥ चूलनआहोकोय॥
 १६०॥ जाकीनानिगं नीरनहि॥ अवरणहोयजिहि
 स्रपा॥ निसचैहोयदरिद्रणी॥ जदपिसंग्रहेनूप
 १६१॥ दीरघहोयअनामिका॥ उपगातातेहीना॥
 ताकोपतिजीवतरहो॥ वर्षदोयकैतीन॥ ६२॥
 कथावतीनिजावती॥ सोगवतीसीनांमा॥ उच्च
 केसरसनांकविना॥ कबऊनपावैदांमा॥ ६३॥ अ
 तिलफअतिहिसालतन॥ अतिलंगरस
 होय॥ तातियकोअपनायकैनेदनदीजोकोथ
 ॥ ६४॥ एकपीतइकबीनऊच॥ अधिकबीनऊचु
 अंग॥ वातकरततिहितरुणिके॥ फलनतिग्री
 वउतंग॥ ६५॥ रोमहोयसवगातपर॥ चलतचा
 लउत्तालअतिदुरबलअतिबीनतन॥ सोल
 नपावैबा॥ ६६॥ जाकेरूपकपोलपरा॥ वातक
 हतहोइजाहि॥ तातमाततिहातरुणिके॥ नि
 सचैजीवैनां॥ ६७॥ अधरपांनताळरसन॥
 दसननऊपरसपांमा॥ उच्चदंतदीरघअधिक॥ रां
 दरिद्रणवांमा॥ ६८॥ जाकेअधरविसालअति
 बोलतसदाऊवैणा॥ एतारीनहियाहीयो॥ नि
 रयपरपयुगनैण॥ ६९॥ शतिसप्तप्रधंग॥ विर
 ऊहदु॥ कुहलिया॥ जिनहिजांनैषीतगति॥ र
 हैमलिनसोनित्रा॥ पतियारौतिहिनांपरै॥ न
 मुराषोअतिचितर॥ वचनमृयडुटसुनावै॥ ७०॥

कवि न कृपण अति होय । षय न ही आप षवोके
॥ सो गवती सीर है वात न हि मुदित सुखां नै ॥ श्री त
हरण त ब होय जीत गत जो न हि जां नै ॥ ८० ॥ दुहा ॥ पि
य नागर मूरुष त्रिया ॥ त्रिय नागर प्रिय कूर ॥ प्र
न व च उरुं के नां मिले ॥ होय श्री त रुच हर ॥ ८१ ॥
। इति अष्ट म सं ॥ अथ पुर मष्ट गार वर्णने ॥ वि
हरा ॥ अति उन्नत न वा स चीर पर म ल संग धा
रत ॥ पां न नि आं न नि असु परा ग षि न र उ चार
त ॥ र त न क न क नुर माल हा स्प व च न त मुष ना
सुत ॥ मन उ धार ता ब हुत के स नां वि अति आ
ष ति ॥ आ न द त रु ण चि त हि त व ठ त इ ह वि
ध जो कां मी रह त ॥ म नु हर न हर ए प त न कां म न
क बु उ पा य इ ह वि ध क ह त ॥ ८२ ॥ अथ वती व ण
नं सो र ण ॥ नृ प ति मं त्री ही न ॥ इ ती वि त कां मी पुर
ष ॥ ए हो कृ त रह ती न ॥ को कं सार इ म उ च रे ॥
८३ ॥ व ह नु जं गी ॥ सु षी माल नी या ल नी यो चि ते
री ॥ न टी ना य नी धो व नी धा इ च रे ॥ सु सं मा स
नी ना टि ती बाल वारी ॥ तं वो ल णी त्रिया ए डु ति
का वि चारी ॥ ८४ ॥ इति वृत्त म सं ॥ अथ वी र वृ
र णं ॥ दो हा ॥ सि व वी र ज लो हा ह मे ॥ क न क सु
तां बा होय ॥ चारौ धा त सु धा त सु धा त कर ॥
षा ति र सि क स व को इ ॥ ८५ ॥ प य दृ त आ मि
ष मो च र स ॥ मि र च मू स ली स्यां म ॥ म धु मुं डी

... ५३ ॥ अथुदुधी अनिराम ॥ ८५ ॥ संपाति
 ली गुड उड हा जो कंपी पर पं ॥ कौच बीज धौ धान
 टा ॥ असु मज्ज नि जी मं ॥ ८६ ॥ न मर दन तिल ते न
 कौ ॥ पर मल पां नि जि नो ॥ ८७ ॥ अवर कडू जिल मलौ ॥
 धात सब न मै हो ॥ ८८ ॥ उंद नाराज ॥ नक्षत्र पुष्य
 नौ मरै न एक गौर पाई ॥ मंगाय माल कांगुनी सुध
 मै नु नाई ॥ टांक हो प्रमां न जान प्रात उषा
 ई ॥ कां मनी ॥ किलो ल तै अनं कं ६ पाई ॥ ८९ ॥
 ॥ धात वधार न बल करना ॥ ह म पू ठै जो को ॥ ९० ॥
 पय समां न ति कुं लोक मै ॥ अ व त न उष्य को ॥
 ॥ रतिकी अंत ज पय पिये ॥ घंटे त बल ति ह अंग ॥
 ता हिर वन की सु चि वंटे ॥ चौ गुन वट अ नंग ॥ ९१ ॥
 अथ स्थं न न ॥ मुनी इ स फ न जाय फल ॥ जा वं ती
 अ हि फे न ॥ विज या अज वाय न कुं तै ॥ सा तौ थं
 न मै न ॥ ९२ ॥ उ प य ॥ स सि के सर डिं ग लो ग रं
 जा ति फ ल जां न त ग वि टां क अ हि फे न टं क टि
 इ म ग म द मां न त ॥ सक ल पी स इ क गौर साथ
 वि न इ क उ व टा व त ॥ गुं ज हो इ पर वां न जां न
 व टी व ना व त ॥ आ नं ट पी न पां न न सहि व टी ए
 क न य त पुर स ॥ त ब ल ग म नो ज नु च त न ही
 व ल ग न यै न अं म र स ॥ ९३ ॥ सो र ग ॥ च उ र गुं ज
 हे फे न ॥ एक टां क हरि व द न ॥ र है थ कि त कै मै
 ॥ ज्यौ वारि हरि उ सर द मै ॥ ९४ ॥ अथ म
 क कां मे स्वर विधा ॥ दो ह रा ॥ अथ म

रवा॥ बरजअजमोदअनंदा॥ हररबहरेआवरो॥
 स्रवविहरीकंद॥ १५॥ धनीयामोयामोचरसा॥
 गजपीपरअनिरांम॥ सैबरबारषजरफल॥
 लम्सलीसामा॥ १६॥ पिरचकायफलगोषरु॥
 परपत्रजआंनि॥ धतुरास्रवतालीसतज॥
 ररुजांत॥ १७॥ सूकेबीजअनारके॥ जीरामेतअस
 त॥ चित्रान्नाडंगीस्रनग॥ कौचबीजसेंलेता॥
 ॥ १८॥ मज्जलेठीपंकजगटा॥ नवलसिंगोरेजांत॥
 ऊलथकाकडासिंगष्टता॥ नागकेसरीआंत॥ १९॥
 उहकरमूलसितावरी॥ उषधगुणतालीस॥ टांक
 रसबआंनिके॥ अतिस्रुषमकरिपीस॥ २०॥ जौ
 गचिरांजीजायफल॥ गीरीबुहाराजांत॥ दाषदा
 लचीनीनवल॥ अरुएलाळकआंत॥ २१॥ ईसफ
 दजावंत्रीललित॥ टांकरलेआउ॥ २२॥ सउषध
 पीसके॥ न्याराअनतरषाउ॥ २३॥ तीर्क्षपांचसेर
 गिडुग्धमंगावौ॥ निरजलनाजनमेउवटावौ॥ च
 गीआधसेरलेआवौ॥ वसनबांधपैमैठिका
 वौ॥ २४॥ चंद्रायणो॥ दधिसमांतजबदधस्रगाट
 निहारिये॥ विजीयावसनसमेतनिकारस्रम
 रिये॥ ओषधआसगंधआदिस्रंआनिरलाइये
 ॥ फुनिहां॥ पावकमंदविचाररपकाइये॥ २५॥ दु
 हा॥ पयमैपयजबसोषिहे॥ वासूसमज्जयजाय॥
 लोमआदिओषधसकल॥ तामहिदेऊरलाय
 ॥ २६॥ नुयपरधरौउतारिके॥ जबवहकबुकसि

राया॥ टंकजुगमस तवीसतबा॥ दीजैषांमरवाय
 ११६॥ फुनिविवेककरिकैसकल॥ मोदकजीयवि
 लास॥ नामतासमोदकमदन॥ स्फंदरमधरस्फवास
 ११७॥ धातकरनअरुबलधरन॥ याहकमनसजा
 नीरा॥ अनंगउपावनडुषहरन॥ त्रियजावनरंति
 धीर॥ ११८॥ इतिमदनमोदक॥ अथवंदगीता॥
 ॥ वृंताकपकस्सुखितमहिद्वैटांकपीपरमारियै॥
 तिसलायकैपंमोल्जपरमूंदसवारियै॥ पावक
 मध्रपकाइपीपरकाटिगंहसकावई॥ उषधसं
 सरणकरिस्सुचरणडीनअंबरबांनई॥ फुनिअ
 धटांकरवायमधसौलिगलेपसकीजियै॥ नि
 जमनहिअतअनेउपजै॥ तरुणकोसुखदीजि
 यै॥ ११९॥ सोरगाइवैनजबलगनारा॥ तबलनगसुष
 पावैतही॥ लीजोचतुरविचारागीतएकनरतरुण
 की॥ १२०॥ सहसुवगुडआंन॥ पुंससोफुनिवरस
 लावै॥ रतिकरकमलनिजावै॥ १२१॥ उहा॥ कंचन
 अरबिंबगुंजनरा॥ उरगलताकैसंगारबनष
 वावैरवनकौ॥ निसचैवैअनंग॥ १२२॥ कीटले
 यजेसरदरिद्रा॥ वनमैतासनिवास॥ अधिक
 फैनमुषतैतजै॥ तिनपरताकौवास॥ १२३॥ फरै
 बिरोलीफैतमहि॥ फारैकीटनिकारि॥ बाल
 वेलसंगदीजियै॥ इवैमदनजलनारि॥ १२४॥ ब
 पै॥ अथमकामकिलोडबालसंगचिरजौकीजै

* नारी श्रवति विहासकौ। उरुषत्र वहित त काला दोरुओ
 र अतिरचिरटे। मुदित होय तिय बाल ॥११६॥ *
 ॥ मदन मदन को दहन काटि कुस ताते। दीजे
 बिन ऊपर बिन हेठ चत्र अति चपल चला
 वत ॥ ऊपर हेठ चलाय बिन कनी तर पै गत
 त ॥ जो तीन बार ऐसे जतन कवि अनंदां
 मी करत ॥ कामन मनौ जनि छे प्रवे को क सा
 रइ मउ चरत ॥११५॥ ७६ ॥ जो कामी को मदन
 जल ॥ निकट न पऊ मी होय ॥ तो तिय एक जत
 न करे ॥ जानै चत्र रज कोय ॥११६॥ सोरबा ॥ काम
 न अपणे पांण। सहरा वै प्रिय जंघ जुग ॥ जतन
 सुइ हविध जान ॥ हित प्रावै रवनी रवन को
 ॥११७॥ अशु स्त्रीकरण ॥ जो जन को रति नीव
 न हीट पतिता की तरुणि ॥ हित न होइ डुरु
 वीच ॥ करे सुअशु स्त्रीकरण ॥११८॥ गंगे रवाक
 निरमूलन ओ गयं दपीप्ली ॥ इण जु सम आसंग
 ध आं नीये वचान्नी ॥ समानु चषनु आं नके सु
 लिंग लेप की जिये ॥ वमो सुना वसा जि मारि
 को आनंद ही जिये ॥११९॥ सहित ठरी राषं दु सबे
 सम आं नीये ॥ अति सुषम करि पीस वसन महि
 बां नीये ॥ माल कंगुनी तेल एक सम बो नीये ॥
 मदनां कुस गुरु होय लेप जो वानीये ॥१२०॥ ७७
 ॥ फरत समै कामी रसक ॥ आं निरुधिरत म
 चोरा ॥ मदनां कुस मरदन करे ॥ अति ही होय
 कगेरा ॥१२१॥ कनकरि पु चंबेली

पत्रवंतंसे लीजीये ॥ मनसिल अरु कुठ पय
 ष एक करी ॥ जीये ॥ सक कर समपी सते ल त
 मेर ला वै ॥ अग नमै अव टाय ता कुठि त ठान नि
 ना वै ॥ १२३ ॥ ॥ ओषट सा क ल ते ल
 ठ नाय सु ली जीये ॥ म दनां कु स कां म र द न की जि
 ये ॥ अति गरिष्ट जो र व र करा ई ये ॥ तरु नी सों
 हि ल मि ल के मन हि म ना ई ये ॥ १२४ ॥ बं दू प ध री
 ॥ जो षा इ जाय फ ल स दानां म ॥ सं को च न हो इ जु
 म द न धां म ॥ लौं का मी पा वै कु ला स ॥ म नु ति या
 व र ष द्वा द स वि ला स ॥ १२५ ॥ स वै द्या ॥ कु म द रि
 म बा ल मं गाय के नाम ति त न लो ह सौ षं म करै ॥ ठ
 न पुरा त न ची र के सं यु त तां वै के ला ज न वी च ध रौ
 ॥ ध र पा व क्त ऊ प र ता हि प काय के अंबु ज मों ति
 ह र्ग न रै ॥ फि र ली जी ये अं व र सों द के सं व सु
 वां ह सु का ए तै का ज स रौ ॥ १२६ ॥ चं द्रा इ णा थो रौ
 सो अं व र फा रि वि रं ग हि धा री ये ॥ जो नी जै ति ह
 मा हि त ना हि नि का री ये ॥ सं को च न अ ति हो य
 त सं का की जी ये ॥ फु नि हां वा ढे के ति अ नं द
 म हा सु ष ली जी ये ॥ १२७ ॥ मु क्त वि र्य वि ध चो प
 वि न मं धा त जा त जि न हो शार ति रं च क द्र वै
 जु सो षा सो का मी इ कु ओ ष ध करै ॥ इ वै न वै ग
 धा तु न हि प रौ ॥ १२८ ॥ चं द्रा य ण बं दू ॥ मा सो लो ह
 द स टां क सु व स म ली जी ये ॥ मि श्री उ नै प्र मा

एक वकी जिये ॥ दिन ६ की स प्रात जो जिन
 ६ है ॥ फुनिहां ॥ परे न वीय बिग धा उन हिजा यहै
 ॥ १२२ ॥ सोमरो गोपी प्रति करे सरति जो का
 नी ॥ के चिंता बोह अपेना मिनी ॥ ताते सोमरो
 जो होइ ॥ निसचै वैद्य कहे सबकोइ ॥ १३० ॥ ६६ ॥
 मदन सदन कै रति समै ॥ चले सरद बडु वार ॥
 रघन उरषतन ॥ नासुषपावे नारा ॥ १३१ ॥ चंद्र
 फल कदली पर पकषां रुमधलायकै ॥ नीजे रस
 आंबरे सजल औ टायकै ॥ प्रात सात दिं कामि
 जो समघाय है ॥ फुनिहां ॥ रहै न कोऊ रोग महास
 षपाय है ॥ १३२ ॥ फलषज्जर कदली समर सजां नी
 ये ॥ तातेइ नाता लमघांता आंतीये ॥ तीनेपी स
 दुषसंगपी वैनांमनी ॥ फुनिहां ॥ पावे परमकुला
 सऊरोगन कामिनी ॥ १३३ ॥ एला लघुपी परीसी
 तसिला जित आंनि ॥ फुनिपी सखानके वरीवां
 थौंटां क होइ प्रवांन ॥ पुनि प्रात समै तंडुल के ज
 लसौं नित करजे उवषाय ॥ अतिसुष उपजे ज
 हिदिषतां कहत आनंद उपाय ॥ १३४ ॥ ६७ ॥ कदली
 दलकी लसमकर ॥ तामै हरदर लाय ॥ फुनिरस
 लसौं लीपीये ॥ हस्ति निरोग निहाय ॥ १३५ ॥ उडद
 चूर्ण प्रकुवा सहित ॥ सुद विनाई कंद ॥ गोपयसै
 पीवै तरुणि ॥ सुषपावे आनंद ॥ १३६ ॥ कल्पविध
 जो पई ॥ अरजुन बाल पिनासु आंने ॥ त्रिफलास
 हितर लाय वषांने ॥ तिलके तेल मेल अवटावै ॥

करे स्पामकचदिनप्रतिनावै ॥२३॥ नोदोरदा
सौतमंगोवै ॥ तिनके तेलमेलउवटावै ॥ चिहुर
नपरलावैजोकोय ॥ कचकाजरजोसोनाहोया ॥ २४ ॥
॥ अजाइधनगरासन्ननिजे ॥ सरसपातफुनि
सरसघनिजे ॥ कचलावैकासीमैपीसा ॥ अनि
स्पामकरेजुविसीसा ॥ २५ ॥ जोचंपैकेफुनमंगोवै
॥ बीजधनूराकोरसत्यावै ॥ सजलपीसजोलावै
केसा ॥ चिहुरहोइनवकजलवेसा ॥ २६ ॥ रसनी
इआवरेपिसावै ॥ दिनइकवीसकेसपरलावै
ताकेसरलहोयकचस्पाम ॥ घनीवारत्रैचतअ
निरामा ॥ २७ ॥ डहा ॥ वारनकेचिजवारके ॥ मधु
रतेनकेसगा ॥ कचलावैइकवीसदिना ॥ वट्टेवा
रबजअंगा ॥ २८ ॥ रखासुनकेचिजवारके ॥ माहिष
पर्यकेसगा ॥ कचलावैइकवीसदिना ॥ वट्टेवारव
जअंगा ॥ २९ ॥ इतिकल्पविध ॥ अथलोमखा
धन ॥ चंद्राईणा ॥ पाचटाकहरतालटांकजोपार
पोसतआनरलायटांकइकवारतै ॥ चुनाजरसो
पीसकेसपरलाइथै ॥ फुनिहा ॥ वाहनकोककनांउ
नकबरुपाइथै ॥ ३० ॥ चोप्रई ॥ चुनाअरुआने
हरताल ॥ टोकपीसकांजीमैराना ॥ नावताचिह
इरुऊयजाहि ॥ कहुसदेहतौयामैनां ॥ ३१ ॥
॥ यमजस्तकोचूरनसावै ॥ विमलतेलकटम
धउवटावै ॥ सातदिवसफुनिधामसकाइ ॥ की

जतकेसहरऊयजाय॥१४६॥अथपरोमसबहरकर
ऊपरतेनकरकौत्यावे॥कैऊचनेकौत्यावेनीरा
कबहीनउपजेबालसरीर॥१४७॥कदलीरसकदली
रो॥वीसवारप्रलेपसकारे॥हरहोइकचसकनकी
कोककलारसनास्निनीजे॥१४८॥ ॥
गोदधअरुपीसैहरतारा॥चूनाउन्नेकदलीर
रा॥करैनेपतीनजौनांम॥तहांनहोयवारकौधां
म॥१४९॥इतिरोमसाजनसंपूरण॥चंद्रायण
सामसपीपरकोंगकवफुनिजानीथै॥आसग
खानकनेरबिऊनिजआनीथै॥कामनिकेतव
तमेनऊचलाईथै॥फुनिहां॥नारीहोइउरोज
महासुखपाईथै॥१५०॥इति॥घरिमफलकटते
नेमहि॥ऊचलाईउवटाय॥उरजहोइआतिही
कवित॥दिऊश्रीफलनाय॥१५१॥कंबरागकर
चौपईवजबाबचीब्राह्मीअरुआप्रक॥मांषत
हरिदजांतकुनिनद्रक॥चौदसमाघपहअंध
यारोपीवैपीसवैसचौबारै॥१५२॥मिरचऊनीज
नलेसमदोऊ॥बरषएकलौसाधेकोऊ॥मध
रअमलकबुषायनसाय॥पिकसमकंवनुत
कैहोय॥१५३॥इति॥सुंठीमुंठीविहरमी॥ववपीप
रअनिरांम॥सातरातमधसोन्नये॥करैरुगंध
पगांन॥१५४॥उसएविवारणचौपई॥हरसोत
आंवरैत्यावे॥समकरपीसअंबसोप्यावे॥सात

दिवसजौपीवैकोइ॥ ताकेउफ्फनिवारणहोइ॥
 १५५॥ त्रिकोंबकेसकेपातदि॥ समकरजौपीवैउवि
 प्रातदि॥ ताकेउफ्फनिवारणहोइ॥ निजनागर
 जानतसबकोइ॥ १५६॥ बांभकरण॥ ॥ चीत
 औरधाउसमत्वावै॥ समप्रवानजन्मैउवटावै
 उष्यवंतवनिताजबवनिताहोइ॥ तीनदिवस
 लगपीवैसोइ॥ १५७॥ मगजपीसताकोलेआवै
 ॥ फुनिस्फकायकेतासपिसावै॥ दिनतेआरना
 रजोषादि॥ निसचैतरुणबांभऊयजाहिए॥ १५८
 बालकदसनजेपहिलेपरै॥ आदितवारस्फ
 कंचनजरै॥ तरुणबांभसोआनिबंधविपदि
 तस्फबांभमहास्फषपावै॥ १५९॥ विजयबंभ
 वर्षतीनकोआनिगुफा॥ दिनपतरइउजिज
 निसषायजौटांकदसा॥ नारिवांभिऊयज
 १६०॥ अथबाइहरणचौपईवे॥ नरेदके
 राईल्यवै॥ स्फवरकेवरहिवउरुणद
 सोमुषपरलाशाबांभइहरकरेउजिज
 लप्रस्तजौमुषमले॥ वदतक
 ॥ केबाहीकेआदहीपरककद
 अथमुषकटकहरण॥ चोरे
 रुलोदपिसावै॥ सात
 मुषपरकटकनदि
 वहो॥ १६३॥ सीधोले
 सोफुनिजवदि

मुषविचित्रकृतकहरे ॥ १५५ ॥ मेवरकडुकअस
 हरदा ॥ अजाइद्वुनिआइ ॥ एपिसायजोमुषमिले
 एषोवैनिजताहा ॥ १५५ ॥ उवटणा ॥ हरदगोषरुसूव
 नष ॥ मोथासरस्यांजांन ॥ कासमीरकहरलफ ॥ टां
 करसमआंन ॥ १५६ ॥ टांकमारचंदनअरुण ॥ सम
 ऊसमतिहारा ॥ तवलेचरांजीटांकदसा ॥ पीसोस
 कलसमारा ॥ १५७ ॥ संबहरतकडुतेलमहि ॥ करे
 जुउवटनकोइ ॥ विमलरूपराजेतरुण ॥ कम
 लवदनमुषहोइ ॥ १५८ ॥ पसनिवार ॥ अथममसाके
 काटिके ॥ हरिरक्तनिकास ॥ चनासाजीपीसके
 निपकरेफुनितासा ॥ १५९ ॥ अथमुषनिवासह
 रणं ॥ चौपई ॥ सिववीरजअरुक्तवमंगावै ॥
 मोथासहितेठीलेआवै ॥ धनीयाअरुइलाइची
 जांन ॥ जलसौंपीसमुषमिलआंन ॥ १६० ॥ नषजप
 त्रचंबेनीआंनै ॥ पत्रजुफुनइलाइचीजांनै ॥ उरी
 बांधपांतनमेषाइ ॥ ताकीमुषकवासतजजाइ ॥
 १६१ ॥ जोनऊवासहरनाचौपई ॥ मधरतेलमे
 नीबरलावै ॥ तरुनकिरनसौंतप्तकरावै ॥ जा
 कीजोनडुरगंधअतिहोइ ॥ तरुनीतेललगवै
 सोइ ॥ १६२ ॥ काषकवासहरणंइडाइणाडं
 दतबा ॥ नहुमजानीये ॥ इष्टहितगगहोसुचुना
 आंनिये ॥ कामनिकेकासीकाषजोलाइये ॥
 फुनिहा ॥ कोककलाइमकहेऊवासनसाइये
 १६३ ॥ चौपई ॥ मोथाअरुइलाइचीजांनै ॥ नष

कचूरफुनिपत्रजत्रांनै॥सिरमहिमारिन्हायने
 काइ॥अतिस्ववासनिजतातेहोय॥१५॥दोहा
 समकेवराआदिदे॥तिवस्ववासतहोइ॥केव
 कलेवरलाइये॥इहजानतसबकोइ॥१६॥
 इतिश्रीकोकमजरीकविआनंदकृतवियविधा
 नंदसमाध्याय॥अथमोहनतिलक॥चंद्रायणा
 ॥स्वितआकजरक्वकिमोप्याजानीये॥श्रीलिजे
 निजमनसिनिरजगंतीये॥पांचूपीसरूधि
 सूटीकाकीजिये॥द्विमतमोहैनारमहास्वमलीजि
 ॥१६॥दोहापत्रलजालुकमलजलु॥मकुलेवीव
 जान॥कंचपसौसबपीसकै॥तिलकनालपरवा
 ना॥१७॥चौपई॥कारीबरपीपरलेआवै॥मोटासं
 गीओरमंगवै॥अपनेअंगमेलकानिलेह॥पांच
 पीसकरौजिमवेहा॥१८॥विजयबंद॥फुनिम
 भनिके॥तामैकिके॥टीकाकादै॥अतिहित
 ॥१९॥चौपई॥अबस्वहोइवियाजिहिमोहो
 कोकतचाहनितजेहो॥जाकौरवनप्रीतन
 धरइ॥सोनारीइहटांनौकरइ॥२०॥दोहर॥मो
 चंनजोनिरक्त॥काहैतिलकलिलार॥जबटी
 बैदगन॥तबवसकयनरतार॥२१॥अंजन
 चौपईतगरक्वतानीसमंगवै॥तववातीका
 पीसलगावै॥सर लंदीपमहिनेला॥व
 ती वहेतेना ज्ञायणावंडा॥आ
 नैत मनमषीपरी

रपारीयैरंचकनआंदिमैतजबदीजीये। जौमनन
 वेतारताहिवसकीजीये॥१८३॥ चूर्ण। मनसत्तचै
 सकमत्तद्वन। गोरोचनअनिराम॥असिअंजन
 नैननिकरे॥निरषतमोहिनांम॥१८४॥
 लेइमधकपकेपष। चाषअरुक्कवन्नजै॥तगरकंजको
 मूतकाकजंघाफुनिलिजै॥एवउपधपीसएरंरद्व
 मधप्रषावै॥रविवासरजबहोइवसनमृसुकाकोत्पाके।
 एरंरपत्रचूरणसहितवसनमधनिसचैधरै॥जाऊपा
 रमारैजकोऊप्रगटप्रेमतासोकरै॥१८५॥नुकांजन॥
 षंजनलेपिंजराभैमारै॥बरषएकवाकोप्रतिपारै॥वर्ष
 मधअसैसौदिनआहि।सातपषतिकसैसिरताहि॥१८
 दिनप्रष्टनआवैसोइपेवासीपिंजरमहिहोय।नैन
 षोजततिहरदै॥नैसेहाथमेठतिहगहो॥१८७॥सातपंष
 उपारिकर॥कंचनमधमंठाइ॥कोऊनदेखैतासको
 मुषमेठजहाजाइ॥१८८॥अस्तमंजारीआंनकै॥गो
 घृतताहिषवाइ॥तिहजौमारैवमनकरि।सीअंमृ
 तलेषाउ॥१८९॥लीजैहुळकपासतै॥जौनयंत्रकरसो
 इ॥काचैदीपकभैधरै॥निजवातीकरसोइ॥१९०॥चंद्र
 इणा॥आधीरैनअभावसनैननिहारीये॥अहिवात
 कोधीउदीपकमहिजारीये॥मनषषोपरीऊपरकाज
 रकीजीये॥फुनिहां॥कोऊनदेखैताहिनैनजबदी
 जीये॥१९१॥चौपई॥कदमद्वनकहूंतैव्यावै॥कै
 केसूकेफलमंगावै॥कैकेसूकेफलनिहचैजेअवैते
 सबनीकीवोररषावै॥पुरुइइइइंतजे

सहसवारसो आकृतद्विजे ॥ सातडुहपदिराके
साइ ॥ जिहिदें सोअपनैवासिहोइ ॥ १२३ ॥ अथ
मंत्र ॥ ॐ चाम्पासोरं पुं लंगं प्रोक्त्वं मा नो कल्पेयं
स्वाहा ॥ ॥ वापुं मी ॥ ॥ के स्त्री क प्र सु म्नी
आवे ॥ मनत्रि च लु म वार ज प धा वै ॥ पढ कर जो ॥
जैजास ॥ जौ नि स चै तिय व स ऊ वै तो सा ॥ १२४ ॥
अथ मंत्र ॥ ॐ वापु मा प्र हिये ॥ उ न य व ल तं न वा
वं मो क्त्वा स्वाहा ॥ प व्च नी व स कर तं ॥ च उं प र्श क
रे के स्त्री के ऊ स म ग हि ॥ वां म पा स ध र पा न ॥ म ध क र
र प द म नि ता म लु वि ॥ प टि इ ह मंत्र सु जां न ॥ १२५ ॥
पद मनको ज ब दी जीये ॥ द्वि त तुर त व स होइ ॥ लो
चं त वं तं क य श्र व ण स्म णि ॥ मंत्र व स्य स व कोइ ॥
१२६ ॥ अथ मंत्र ॥ कामे स्वर म हिये उ ए पं मा क्त्वा
स्वाहा ॥ ॐ कामे स्वर प टि प च्चे मा कार वि ध्या मु हि
यं स्वाहा ॥ चित्र नी व सि कर ण ॥ स उं प र्श क दू र्श
की ज र कौर स ए वा वै ॥ एक जा य फ ल मे न पि सा वै
॥ फु नि स्त का य कर ध रै नि रा रा ॥ ज ब आवै कामे
साने वारा ॥ १२७ ॥ वा को पी स पा न म हि रा षे ॥ वा के
व च न पां न म हि न्ना षे ॥ हो त ही का न दे इ न व ता हि ॥
हि त ही करै पी त नि र वा हि ॥ १२८ ॥ अथ मंत्र ॐ स्म ने
ग भा या ॥ कामे वा य नी स्वाहा ॥ सं ध नी व सि कर ण
दो हा त ग र मू लं पी प ल प टी ॥ जे ब ही सं ध नि षा इ ॥
जो जं ब क व सि अं स म स ति ॥ नै सै वं स ऊ य जा इ
॥ १२९ ॥ मंत्र ॐ महि ता त स्त्री मि नी ज हिय म ह उ

॥ हस्तनीवसकरणं ॥ चउपक्षं पंषपरैवाकीति
 सहतरफुनिचउरपिसावे ॥ पठकरमंत्रतिल
 चाल ॥ निरषत्रियामोहेततकाल ॥ २० ॥ अ
 पंवा ॐ धरिकामदेवायस्वाहा ॥ १७ ॥ मंछांउ
 लावेचरन ॥ तरुनसुरतकेअंत ॥ जबलगज
 जगतमै ॥ श्रीतवटावेकंता ॥ २० ॥ चउपक्षं सु
 अंतलेअपनोवीरज ॥ लावेनांमवांमपगत
 ज ॥ एमीमहिनावेजोनाहा ॥ तरुणीकरैश्री
 रघाहा ॥ २० ॥ इतिकोकमंजरीकविआत
 तनरयुवतीवसकरणं ॥ द्वादसमोअध
 ॥ अथजोनिचएनि ॥ सकेरियमोएकंजो
 मतोमृदुवारिज एकनकीअतिसैयक
 एकमकीकहुगोरसनासम एकनकीकहु
 वगिरी ॥ एकनकीजलहीनविरजत
 नकीनिसवैषनिहारी ॥ कोमलहोइनहोइ
 तोइसूश्रीतमकोमठमोहतनारी ॥ २० ॥ हि
 नारीएकविरंगमहिनासिकारूपसमांन ॥ सु
 आदिताकोमिले ॥ कामीरसिकसुजांन ॥ २० ॥
 रतिरुचिउपजेनाहकौं ॥ नारीमिलेजुकाइ ॥ र
 चिवटायजौरतिकरौ ॥ तोरतिरुचिअतिहोइ
 २० ॥ नारीएकवरंगमहि ॥ सबनारनकौंहीत
 मदनांकुसकीसिषरसम ॥ तहांमनसिजको
 ता ॥ २० ॥ जांमदनांकुसकीसिषा ॥ प्रगटपुरष
 बिहा ॥ लोकाकेउतहितहे ॥ जांनिगुप्ततिरनेद

॥२०७॥ रगत पर तजो जो नितै ॥ बीरज प्रवै जुना
हि ॥ जव लगनिस चै जो नीये ॥ गरन वधैत हिमां
॥२०८॥ मदनो कुसजा पुरषको ॥ तासो लागत

॥ प्रवै जवेग हिको मनी ॥ नाग तिही अऊ लाश
॥२०९॥ मदनो कुसजा जो लगे ॥ तासो वटै अनंग
घटै प्रपकं प्रको ॥ मिटै तरुनि डषतंन ॥२१०॥ म
नां कुसजा पुरषको ॥ नागे तासो जाय ॥ चार जो
जोरतिकरै ॥ तारिनै कुअपाय ॥२११॥ पदमनी

निवर्णन ॥ अति वरतुनको मल विमन ॥ होइ
नता परवाल ॥ प्रवै बेग मधुगंधसम ॥ पद्मनि
चित्रनिवाल ॥२१२॥ संवनीयो निवर्णन सोरवा

x ब्रजत होत बाल ॥ प्रवै सुदि -- गंधसमा ॥ प्रवै
हीउता ॥ अति कुगंधसमनि मदन ॥२१३॥ ह
तनयो निवर्णन ॥ कविन तिठ परिबाल जल ॥

नगमहिषी पुरपीन ॥ प्रवै जगमधुगंध
॥ हसतनि अतिरसलीन ॥२१४॥ प्रवै वेगरति
रं चकरि ॥ पदमनि चित्रनिवाल ॥ एकसेमनि

अरु हसतनी ॥ प्रवै न हीउता ॥२१५॥ इति
योदशमधु ॥ अथ मदनो कुसवर्णना ॥ इहा
मदनो कुसजा पुरषको ॥ आगे होइ विसाल ॥

ठकवार अतिकोतनीहि ॥ प्रवै सरत उताल ॥
॥६॥ जाको समम अति हिनद्यु ॥ नहि टपतै वा
दनार ॥ अति होइ विन चारण ॥ लीजे चउ

वार ॥ २१ ॥ जाको फलरक गोर बड ॥ नहि दीरघन
धु होइ ॥ तास मउतमा और नहि ॥ जानत च
जकोइ ॥ २१ ॥ मदनोऊ सकौ सिर फलरा ॥ होइ
फलरत बारा ॥ इवै वेग नग परसतै ॥ टपत नपा
मै नारि ॥ २२ ॥ इति चतुरदश प्रबंध ॥ अथ अ
गवर्णनि ॥ ३ ॥ काक जंग उर उर जकटा ॥ पंच
ग नषदांन ॥ अधरकपोलन बिंब सहित ॥ तीना
षं मन जांन ॥ २२ ॥ अधरकपोलन सीस उरा ॥ उ
ज पांच असनैग ॥ सात अंग मरदन करछा ॥
नऊ बडु वसिमेन ॥ २३ ॥ इति पंचदस प्रबंध ॥
उतपतिकांम कलोलके ॥ फलरसिक सबको
एविलास तब हीवतै ॥ त्रिय विचित्र जव होया ॥ २२ ॥
दोयरति कजि संग निस ॥ सुनौ चाहिस
मुख ॥ जो बडिकरै तौ बल द्यये ॥ इत्य विन त्रिय
हिस्का ॥ २३ ॥ काक जंघ उर उर जकटा ॥ पंच
अंग नाषदांन ॥ अधरकपोल कुच सी
रा ॥ एवं विन सहिचांन ॥ २४ ॥ मस्य लसु क
लपरि ॥ और हेठके होठ ॥ एषं मन जांनै चतुर
नै कन जांनै गोठ ॥ २५ ॥ सेक बर एणन ॥ विमल
और परमल विमल ॥ विमल ऊस मसु वास ॥ ऊ
सम विमल कादंबरी ॥ विमल सेजकी वासा ॥ २६ ॥
षांत लवंग इला इची ॥ जाति फल घन सारा ॥ जाव
त्री संगमै लिकै ॥ इह विध सेक संवारि ॥ २७ ॥ नाग

वाचकरकृदिसीर उरुजतज्जोर्नवि सति करजोर्न
 क्रिसार काक सपरमज्जरे
 रपरमल वसनतनय असपरमल वज्जलाया वदन
 पो न राजत घप्रधरासि जहि वैवे आया ॥ २२ ॥ तवम
 प्रनिगजगामनी ॥ नवसतसा जिश्टगारम पासजु
 वैवहि आयके ॥ रूपअपार ॥ २२ ॥ मंगलावेद
 अति विमलवैररुवा सती विमलसक विवाध
 ऊहपुस्पचेदन चारु परमल धरे पांनमगाइ
 सा लहश्टगार संवा रिस्कंदर गवन स्तनगम
 राल ॥ वैवे स्तन मुष आय सासि मुष रूप पर
 परसाल ॥ २३ ॥ अद्य आलं मुत्ता ॥ रीगने केयो
 सससुर ॥ त्यो आलिंगनिपोच ॥ आसन के सि
 रताजइहि ॥ आलिंगन रतिराचा ॥ २३ ॥ तसुण
 कंध करिवाम धरिग वैवा वतिपतिग दग पांन
 पवावति धीत करिग आलिंगन आमोदग ॥ २३ ॥
 सुदित आलिंगना त रूणि जंघपति जंघमहि
 मटपाच तपीयजास ॥ इह आलिंगन मुदतकति
 उपजत परमकलासा ॥ २३ ॥ सिम आलिंगन ॥ प
 कटिलीने एकपग ॥ हितिय जंघ परजोना ॥ पिय
 परमल नावा हिजु उर ॥ सिम आलिंगन मोना ॥ २३ ॥
 थानिसंगलिंगन ॥ पतिकटिलपटै विविचरना
 नरेपरसपरअंक ॥ उरजगहस चुंबन वदन ॥
 नाम आनंदनिचांक ॥ २३ ॥ रुचि आलिंगनी गति य
 वैवैपति जंघ परा ॥ नाम कंध करवाम ॥ मुक्तव
 सन नियमी करौ ॥ आलिंगन सचिनाम ॥ २३ ॥

प्रथमचतुरजो कामिनी ॥ पतिको आसनदित
 अतिअनंदमनुपजे ॥ वंटेविवितनहेता ॥
 २७ ॥ जोगासना ॥ तियपोठके पालषीसिऊपरै ॥
 जगजंघडककर आधुरै ॥ पतिबैठनुजागहि
 केनकरै ॥ कविआसनजोगविचारकरै ॥ २३८ ॥
 आसन ॥ नुजऊपरनामकेपाउधरै ॥ पियबैठ
 नुजागहिकेनकरै ॥ रतिनामकह्यैइहिआसन
 को ॥ रतिधीतविनोदविकासनको ॥ २३९ ॥ मदनो
 दितआसन ॥ कटिऊपरनारिकेपाउधरै ॥ पिय
 बैठगहैकचकेनकरै ॥ मदनोदितआसननाम
 यहै ॥ रतिहोतविनासअनंदकहै ॥ २४० ॥ इहास
 नचंद्राश्रगा ॥ कामणिकेकदलीदलदोऊनुजधारि
 कै ॥ कामीकरै किलोलअग्रबैठारिकै ॥ गहैपरस
 परअंककामसुषसुषमानइ ॥ फुनिहां ॥ इंदना
 मइहआसनजानसुजानइ ॥ २४१ ॥ लालआसन
 सुंदरकेपगलेइडककरिधारिकै ॥ पियपावेआ
 नंदअग्रबैठारिकै ॥ गहैपरसपरअंककरैरतिकां
 मिनी ॥ फुनिहां ॥ लालसआसननामलहैसुषन
 मिनी ॥ २४२ ॥ विपरीतआ ॥ पिउपसारिकैहेठपरै ॥
 चढिनामिनीकामकिलोलकरै ॥ विपरीतहिनां
 मनुआसनको ॥ मदनोदितकामविनासनको ॥
 २४३ ॥ अदुनआ ॥ पियपोठिकेनारिउरोजगहै ॥ तरु
 गीपतिऊपरवैठरहै ॥ कामनीकामकिलोलकरै ॥

कविआसनअंबुजनामधरो॥२४॥रतिपामआस
 नचंद्राङ्गा॥कामीकरपटकामत्रियाकीजंघमे॥का
 मणिकेटोऊपाउसुकतनितंबमे॥सिऊगहिदोऊ
 पाउकरैरतिमोषता॥फुनिहोआसनरुकोनामय
 हेरतिपोषता॥२५॥हितआसनचौपई॥कामनि
 पोटेपाउपसारि॥पीउपगउलटगहेनिजनारा॥कत
 गहेकामनिकेपाय॥हितआसनवरनैगुनराया॥२६
 ॥घृगासन॥वनितापसुकीसमझयरहो॥पिय
 ऊपरपांनउरोजगहो॥खेभुषतेतुवनकेलकरै
 मृगआसनरूपअनुपधरो॥२७॥परस्परआस
 न॥आरूचरणपाठेकरहै॥उदरचरणपरसपर
 गहो॥दपतिकेनकरैअनिराम॥आसनजांनपरस
 परनामा॥२८॥मृणालआसन॥यनलागरहेनि
 जकामनियारो॥कामनिगहेआनिगनगाडो॥नि
 पतचायपियकेनुंमंगोहोकरैभूगालआसनरुसु
 केहो॥२९॥तमालआसन॥दिहा॥पि
 टिगहै॥दियेअंकनीबाल॥कामीकामनिजंघ
 आसनयहीतमाला॥२५॥सुषपलवआ॥पि
 जंघउनेपकरै॥करउलतकतकेसीसधरे॥
 विवगहेऊचकेनवै॥रुमपधव
 ॥२५॥महाबलआसन॥नामानिकेदोऊपा
 जुगधारिके॥कामीकरैकिलालरुपाउपसारि
 पायनकोअतिहीबलनिहवैआनीयै॥न

आसन असे सो जानिये ॥ २५३ ॥ स्फुरति आस
यके चरण कंठ पर धारै ॥ कटिकर गृह क्रीडानि
सुरत अंत आसण को नाम ॥ या ही तै प्रा वै त्रिय
॥ २५४ ॥ एषो डस आसन करि आवै ॥ तब कामनि
प्रथम वा वै ॥ जतन जु करहि ए हवर नारि ॥ फुति
ले ॥ उने कर वारा ॥ २५५ ॥ होहरा ॥ पिय धो वै ताते
क ॥ तरुणी सीतल तोय ॥ इऊ दट को दट हीर
बहु संकोचन होय ॥ २५६ ॥ नगन जु सो वै नारि सं
घटै जु अंग मनोज ॥ जो वसत न संग पो टई ॥ वा
मन मथ चोज ॥ २५७ ॥ इति स्फुरति ^{आस} ^{सि} ^{ने} ॥ रहे रैन
दो इ घटि ॥ तिमर होइ क बुर्म द ॥ सावत ही आस
करै ॥ अरि साहित आन द ॥ २५८ ॥ अथ उदित अ
तरुनी को है पीठ द ॥ पिय पोठै र तिथान ॥ कटिक
कामनिके ग है ॥ उदित स आसन नाम ॥ २५९ ॥ र
को च आसन तरुणी सिरुपा इ प सारि परै ॥ पिय त
पर वै ठ कि लो ल करै ॥ जुग पीन पयो धर पांन ग हो ॥
इह नाम अनंद संकोच कहै ॥ २६० ॥ सिधु ल अ
न ॥ तिय द द ल पा व प सारि परै ॥ इस रौ प ग पि
के कंध धरै ॥ पति पांन ग है ऊच के ल म चै ॥ सि
लासन रु अ नंद र चै ॥ २६१ ॥ गिंडक आसन ॥
॥ जानिक बंध ॥ तरुणि वरण धर लुजनि पर स पर
क न रिजे ॥ उपवर ह न तिय हे व मुख करि केल करि
॥ कामनि उपर कं त सु क्रीडा की जिये ॥ गिंडक अ

सन अनंद वन सुमिली जिये ॥ २६२ ॥ एषा चो आस
न करौ ॥ तब प्रावे विबिकां मारि मर सुम ऊपजे ॥ रति
हित मोने नां ॥ २६३ ॥ वंदे पथरी ॥ आमो दे सु दिते
उनि प्रेम जांन ॥ निसंग सं चहि आनंद वषांन ॥
आलिंगन पांच ऊ सुरतरष ॥ आनंद विबिर सं प्र
म चष ॥ २६४ ॥ ठपय ॥ प्रथम जोग रंते जांन बजुरि
मद नो दिते मांनो ॥ जानि ई ई ला लेस सुमट विपर
न वषांनो ॥ फुनि पाबे अंबु ऊ अघरंति पोषतं कि
ऊ ॥ हित आसे न हेंग और परसै पर ॥ जीय धरि जे ॥
जो नित मो ले म नी ल ॥ जाति सुष पल व सु प्र हें बिल हि ॥
पर ते अंत आसे न कहिय एषो ड स आसन न ल हि ॥
॥ २६५ ॥ दोहा ॥ इमार सि उ दित संको च कहि ॥ सिधा
न नु गि ड क जांन ॥ पांच ऊ आस न द्वि तिय रति ॥ ज
न ऊ ने द सु जांन ॥ २६६ ॥ एषो म स ए पांच क हि ॥ न ए
सकल इ क वी स सु खि उ ला व न सुष कर न ॥ जा व नि
र ति को ई स ॥ २६७ ॥ चौरा सी आसन सकल ॥ क हे को क
सुष कं ॥ ताम हिते सब अति क विन ॥ कहिये क
अ नंद ॥ २६८ ॥ सोरवा ॥ ए आसन इ क वी स ॥ हरष
उ पा व न ड ष हर न ॥ जा व नि र ति को ई स ॥ किल कर न
को अति सुग मा ॥ २६९ ॥ पद म नी आ स नं ल घु
चो प ॥ मद नो दित सक च कहि म नी ल ॥ माने सुष
पद म नी बाल ॥ ती न वि से ष से ष सा मांन ॥ क हि अ
नंद ए ह जिय जांन ॥ २७० ॥ चित्रणी अ

नोदित अंबुज आरस ॥ फुनिमृणालविपरी...
 लालस ॥ एषटचित्रणिसुषदायक ॥ जानैचउ
 कोकरसनायक ॥ २७० ॥ संपत्तीचित्रणी आसन ॥
 ७६ ॥ संघनिगिंडकजोगरति ॥ होइस्फुटत्रिवषा
 न ॥ स्फुरत अंतरित हस्तिनी ॥ प्रगट महाबल जान
 ॥ २७१ ॥ ॥ त्रियकरतविपरीतरति ॥
 अस्थितनुबतजान ॥ रचैजुआसनकोकमहि ॥
 वनिजवारणवान ॥ २७२ ॥ ॥ मृगआसन
 आरस अवर ॥ उरजआसनजान ॥ त्रिजगआस
 नतीवहो ॥ कहैसुकोकवषान ॥ २७३ ॥ रतिआसन
 अउपरी ॥ मदनोदित अरुजोगवषान ॥ गिंडकासि
 यलमहाबलजान ॥ स्फुपध्वरति संकोच ॥ नव
 रतिजान आनिजियलोच ॥ २७४ ॥ विपरीत आस
 न ॥ ७६ ॥ हित अंबुजरति पोषता ॥ अरुविपरी
 त अनंदा ॥ एआरां विपरीतरति ॥ कहैकोकसुष
 कंदा ॥ २७६ ॥ अस्थितांविधा ॥ अस्थित इंद्रपरस
 परहि ॥ लालसकरिजियजानि ॥ एकतमाल
 मृणाललहि ॥ विवउस्थितप्रयवान ॥ २७७ ॥ ना
 रीआसन ॥ अंबुजरितपोषेत विपरीत ॥ लालस
 हित जीयधरिप्रीत ॥ आसनपंचतरुणिहितकर
 कोकरीतइहविधउचरै ॥ २७८ ॥ इंपतिरुष आस
 न ॥ आसनजासपरसपरनाम ॥ ताकोकरतपुरष
 अरुनाम ॥ सेषपंचदस आसनरहै ॥ त्रियाडर

प्रकरनको कहै ॥२०॥ साक न कर सि क जन अ व ण क
 नि ॥ को करी त स्फरास ॥ चा ह त च उ र स रो च कौ ॥
 कर त मूढ अ ति हा स ॥ २० ॥ ले द प ध री ॥ * * * * * ॥
 पथ म अ म रा व ति कु तौ को का ॥ न हि जां न त को अ
 मृत लोक ॥ इ क कु तौ बा र सा ही म नै सा ॥ ति ह य ग
 ट क थौ की डा वि से सा ॥ २० ॥ ना पा ठे जौ क वि अ सि
 ष ॥ ति ह र च्या का अ करि र वि सि ष ॥ कां म हि वृ दी प
 अरु प च वान ॥ उ नि र ति र ह स्स जा नै स ज्ञा ना ॥ २० ॥
 उ र मं द न सि व च्या दि अ न ग ॥ अ र ति रं ज न स
 म र ति रं ग ॥ प ट स क ल क वी क रि र वि वा र ॥ व र य
 अ नं क वि कौ क सा रा ॥ २० ॥ इ हा ॥ स र ग कि प
 सो र ह स र सा ॥ र चे नु व कु वि ध व ॥ प ट र र ति रं ग
 न वा अ वि चि त हि त अ नं ॥ २० ॥ इ ति श्री को क
 मं ज री क वि अ नं ॥ इ क त षो ड स ष म स मा प तं ॥
 सं व त १०७ ॥ रा जे ष व दि ह् वा स रे लि ष त
 सि ॥ वु ध्मं ल रा य अ र म अ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री
 ॥ वि ना ल प ची सी ॥ इ हा ॥ पा वौ जे वै पै नै च ल ती
 इ हो छे से री नी स र ती ॥ अ म व च न क हि उ र ष ह सा
 वै ॥ और बि ना ल क हा टो ल व ज वै ॥ १ ॥ अ र म ध
 का वै पै नै च न ती ॥ फे च्यौ प्र हि रा षे म द म ती ॥ चै
 ह दे ऊ नी पां न म ग वि ॥ श्री ॥ २ ॥

रहेसिणगारी ॥ जावहिपरिघरिरातअंधारी ॥
 पांनहीपहिरहयाईआवे ॥ ओ० ॥ ३ ॥ हासीक
 रेबैतचौबारे ॥ थाटीदेषैऊपरवाडै ॥ काकरी
 प्रारसंकेतजणावै ॥ ओ० ॥ ४ ॥ विररऊचषांच
 बांधै ॥ कांमीदेषमयणसरसांधै ॥ शरषदेषीते
 नयणनचावै ॥ ओ० ॥ ५ ॥ आपकरतऊचम
 रदननारी ॥ षांचैचीरनिसासाफारी ॥ बांकेनय
 णांतयणमिलावै ॥ ओ० ॥ ६ ॥ जानबूझमिसनि
 तकीबोलै ॥ सरमवातसबहीसोबोलै ॥ वाटै
 रषांपांनचवावै ॥ ओ० ॥ ७ ॥ कंदोइनधोवत
 कनारी ॥ नायनबीपनऔरफनारी ॥ विरर
 उनकैघरिजावै ॥ ओ० ॥ ८ ॥ झूठहिझूठउर
 नदेती ॥ घरिश्फिरिश्उदंगतिलेती ॥ सन
 मुषदेषीकाषवजावै ॥ ओ० ॥ ९ ॥ बडुतरहेमा
 ताकेजाघर ॥ असुतियजातडुवुहेरबाहिर ॥
 जुवादेषकैषेलमचावै ॥ ओ० ॥ १० ॥ दिषिरेनैकरै
 षंधारा ॥ दिषलावैसबअंगउधारा ॥ गहिरसब
 दकहिपायलठमकावै ॥ ओ० ॥ ११ ॥ पुरषांविच
 जायषलेसारी ॥ दातांकरिफेडैसोपारी ॥ षल
 वेरीसोहतेहवधावै ॥ ओ० ॥ १२ ॥ हसिरेमीठाव
 तांबोलै ॥ विररबाजारहिकोलै ॥ जातांपुरषांनै

वतलावे ॥ ओ० ॥ १३ ॥ मारगचलती पाठे हरे ॥ पु
 ह्मचकोडी चैडो फेरै ॥ बांहु ऊची कर काषटि
 पावे ॥ ओ० ॥ १४ ॥ पहिर फुलेन समारे पाटी ॥ ग
 धेसी सुपुहप की आटी ॥ दिने की दांत कवाडि
 दिरावे ॥ ओ० ॥ १५ ॥ राजपंथ नी कलती बान
 ॥ तरुण पुरव सुदैती ताल ॥ नंगरो सेती ताल
 लावे ॥ ओ० ॥ १६ ॥ तरुण दिव कै का अजन्म
 वे ॥ मोड अंग बह्म मानस आवै ॥ पहिरणटी
 लोकरि दिम लावे ॥ ओ० ॥ १७ ॥ छिडकी पाटल
 गाई सोवे ॥ परधर बैठी पति हि विगोवे ॥ पजो
 सी बज्जत जगावे ॥ ओ० ॥ १८ ॥ आपही अध
 रम सण सुचापे ॥ वारर सुष अचर मापे ॥ धक
 भूवते अधिक सुहावे ॥ ओ० ॥ १९ ॥ जाटक
 सज विडाइ ॥ हीवा धरीया बार ॥ और कहा
 कऊय कहै ॥ आऊ वै विमुह मार ॥ २० ॥ पाठे
 जोवे सुपुहसे ॥ बोलावी दिगाल ॥ वम कै र पग
 ठवे ॥ तो साची बिना ॥ २१ ॥ नीलधुजा वैपे
 मै बलती ॥ उरहा पर हा वै जादिस जोती ॥ आथे
 पाथे चीरयावे ॥ ओ० ॥ २२ ॥ नीचो जो वै वा
 हल लावे ॥ थितगर कर जिहर वजावे ॥ ओ०
 २३ ॥ पगटे करी बिना नपची सी ॥ वज्ज

हे प्रणवचीसी ॥ उन्नैजनक निजलाजगमवि
॥ ॐ ॥ ० ॥ २ ॥ ३ ॥ कवत्स ॥ इहदितसेरी फिरपीवेम
गिषतहैउसासनास हाथलाइगाळके ॥ नि
त्पजाइपीनक मुलावतबाजारमै हांसीकरै
नरतासुकहरकुलासकै ॥ त्रिगतकेसरसंधै
कांमीदेषइरतसुनुहकनचायकेदिषायज
तनाळके ॥ खेळनकेकनांषानवस्तुकेबिन
यलेतकहैनैमळवनहैबिनळके ॥ २ ॥ इति ॥

